केन्द्रीय विद्यालय संगठन

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, रेडिका, हुसैनपुर

Pradhan Mantri Schools for Rising India

रचना तरंग
वार्षिक पत्रिका
2025-26

OUR PATRONS

SH. VIKAS GUPTA
COMMISSIONER
KVS NEW DELHI

SMT. PREETI SAXENA
DEPUTY COMMISSIONER
KVS RO CHANDIGARH

SH. JUGAL KISHORE
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS RO CHANDIGARH

SH. P.C. TIWARI
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS RO CHANDIGARH

SH. R.C. SHARMA
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS RO CHANDIGARH

प्राचार्या

श्रीमती रोज़ी शर्मा

विद्यालय प्रबन्धन समिति अध्यक्ष

श्री भूपेश्वर अत्री

प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी, रे॰डि॰का॰ हुसैनपुर

सम्पादक मण्डल

हिन्दी विभाग
श्री राजेश कुमार शर्मा
श्रीमती सुमन
श्रीमती गीता रानी

अंग्रेजी विभाग
श्री नरेंद्र कुमार शर्मा
श्रीमती परमजीत कौर
श्रीमती पार्मिंदर कौर

संस्कृत विभाग
श्रीमती सुमनलता

पंजाबी विभाग
श्रीमती हरप्रीत कौर

प्राथमिक विभाग
श्रीमती बिमला देवी
श्री टेक चंद मान

मुख्य पृष्ठ
श्रीमती गीतांजलि

डिजाइन-ग्राफिक्स
श्रीमती पवनप्रीत कौर
श्रीमती मीनाक्षी

छात्र संपादक मण्डल
अभिजोत सिंह, अरमानप्रीत सिंह

उप-आयुक्त
श्रीमती प्रीति सक्सेना
के॰वि॰ सं, नई दिल्ली

संदेश

हर्ष का विषय है कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 रेल डिब्बा कारखाना, हुसैनपुर सत्र 2025-26 हेतु ई-विद्यालय पत्रिका (रचना तरंग-द्वितीय अंक) का प्रकाशन करने जा रहा है। यह पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा, परिश्रम और सृजनशीलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

एक विद्यार्थी के व्यक्तित्व को गढ़ने में विद्यालय की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। यदि शारीरिक स्वास्थ्य के लिए खेल - कूद जरूरी है तो मानसिक स्वास्थ्य के लिए अभिव्यक्ति। अभिव्यक्ति वह कौशल है जो व्यक्ति को चिंतन-मनन एवं निर्णय लेने की योग्यता से सुसज्जित करता है एवं विद्यालय पत्रिका लेखन के माध्यम से विद्यार्थी को रचनात्मक कौशल को निखारने का अवसर प्रदान करती है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका सभी विद्यार्थियों को प्रेरित करेगी और उनकी साहित्यिक और कलात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करेगी। आपके इस सराहनीय प्रयास के लिए समस्त विद्यालय परिवार एवं पत्रिका के संपादक मंडल को मेरी तरफ से बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ साथ ही उन सब बाल-रचनाकारों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ जिन्होंने अपनी कल्पना एवं भावों के रंगों को शब्दों का रूप प्रदान किया है ।

(प्रीति सक्सेना)
उपायुक्त.

प्राचार्या
पी.एम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1
रेल डिब्बा कारखाना, हुसैनपुर

रेल डिब्बा कारखाना
कपूरथला - 144602

RAIL COACH FACTORY
KAPURTHALA-144 602

Bhupeshwar Attri,
Chairman,
V.M.C., PM Shri KV-1/RCF

सन्देश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1(रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर सत्र 2025-26 के अन्तर्गत ई -विद्यालय पत्रिका 'रचना तरंग' का द्वितीय अंक प्रकाशित करने जा रहा है। इस अवसर पर समस्त विद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई। विद्यालय पत्रिका विद्यालय की गतिविधियों, शिक्षकों व विद्यार्थियों की रचनात्मकता-सृजन कौशल को विकसित करने का एक सशक्त मंच है। यह वह दर्पण है जहाँ विद्यालय का समग्र प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

पत्रिका का यह साकार डिजिटल रूप विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा किए गए उनके उत्कृष्ट कार्यों का प्रतिफल है।

यह विद्यालय अनवरत रूप से शिक्षा, खेलकूद एवं रचनात्मक अधिगम गतिविधियों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल करता आ रहा है। मैं आशा करता हूं कि यह भविष्य में भी चतुर्दिक प्रगति करे एवं प्रगति के पथ पर आरूढ़ रहे । बेहतरीन पत्रिका का सफल प्रकाशन सभी के कठिन परिश्रम व इच्छा शक्ति का परिणाम है।

प्राचार्या, शिक्षकों, छात्र-छात्राओं एवं संपादक मण्डल को पुनः बधाई देता हूं; जिनके सहयोग और अथक प्रयास के परिणाम स्वरूप पत्रिका के द्वितीय अंक का प्रकाशन संभव हो सका। मुझे पूर्णतया विश्वास है कि यह पत्रिका अपने लक्ष्य के संधान में अवश्य सफल होगी।

शुभकामनाओं के साथ।

(भूपेश्वर अत्री)
प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी,
रेल डिब्बा कारखाना, हुसैनपुर
एवं अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 (रेडिका) हुसैनपुर

प्राचार्या की कलम से

वर्तमान सत्र के लिए ई -विद्यालय पत्रिका 'रचना तरंग' का द्वितीय वार्षिक अंक पाठकों को सौंपते हुए संस्था प्रधान के रूप में मुझे हर्षातिरेक की अनुभूति हो रही है। सत्र 2024-25 में इसके प्रथम अंक के प्रकाशन उपरांत अन्य विद्यालयों-अभिभावकों- विद्यार्थियों-शिक्षकों एवं अन्य अध्येताओं द्वारा अनेक शुभकामनाएं प्राप्त हुईं। अत: द्वितीय अंक के प्रकाशन में संपादक मंडल के लिए आप सभी की शुभेच्छा उत्प्रेरक सिद्ध हुई। इस अंक के आभासी प्रकाशन पर पत्रिका से जुड़े सभी हितधारकों के प्रयास में उत्साह व जोश की प्रबलता द्विगुणित देखी गई। पत्रिका का कलेवर अपने आप में विद्यालय में संपन्न क्रियाकलापों, विद्यार्थियों की नन्हीं लेखनी से उपजी रचनाओं, उनकी चित्रकला, अध्यापकों की रचनाधर्मिता तथा विशिष्ट अवसर जिनके कारण विद्यालय को मीडिया का कवरेज मिला इत्यादि सभी कुछ को एकत्र संजोया हुआ है।

इस पत्रिका के प्रकाशन अवसर पर संपादक एवं उनकी टीम को साधुवाद ज्ञापित करती हूं जिनके सतत प्रयासों से यह पत्रिका साकार रूप ले सकी।

शुभकामनाएं।

रोज़ी शर्मा
प्राचार्या

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संपादकीय

ई -विद्यालय पत्रिका 'रचना तरंग' का सत्र 2025-26 में द्वितीय वार्षिक अंक जारी करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। संपादक के रूप में रचनाओं के संकलन के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को प्रेरित करना , बार-बार तगादा करना उनकी रचनाओं को प्रकाशन योग्य बनाने हेतु संपादक मंडल के साथ कृत संकल्प हो कार्य किया जाना। विभिन्न विभाग प्रभारियों से उनके कार्यक्षेत्रों में हुए कार्यों का लेखा-जोखा ग्रहण करना, कला वीथिका हेतु छात्र-छात्राओं द्वारा निर्मित चित्रकारी को एकत्र करना, विद्यालय संबंधी प्रकाशित समाचारों का संकलन करना ये सभी कार्य एक साध से पूर्ण कर पत्रिका का साकार रूप देना सायास कार्य रहा।
विद्यालय की यशस्विनी प्राचार्या द्वारा विगत सत्र की भांति वर्तमान सत्र में भी पत्रिका प्रकाशित कराए जाने का निर्णय संपादक मंडल के लिए प्रसन्नता का विषय रहा हम पुन: प्रकाशन के कार्य में संलग्न हुए और सतत प्रयासों के प्रतिफल स्वरूप पत्रिका निराकार रूप को त्याग साकार हो उठी।
पत्रिका के लिए शुभ संदेश प्रेषित करने हेतु हमारे दिग्दर्शकों में श्रद्धेया श्रीमती प्रीति सक्सेना, उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन चंडीगढ़ संभाग, श्रीयुत भूपेश्वर अत्री, अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति एवं विद्यालय प्राचार्या रोज़ी शर्मा साधुवाद के पात्र हैं आपके शुभाशीष प्रपूरित संदेशों ने संपादक मंडल के पत्रिका प्रकाशन हेतु किए गए संकल्प को उत्साह से द्विगुणित कर दिया।
अपार साहित्य निधि होने के उपरान्त भी यहां नए रचनाकारों की नवल रचनाओं का संकलन किया जाना सार्थक इसलिए भी है क्योंकि
मालविकाग्निमित्रम् में महाकवि कालिदास का स्पष्ट मंतव्य है -

"पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्षान्यातरद्भजन्ते मूढः परप्रत्यायनेयबुद्धिः॥"
इति

राजेश कुमार शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

विषय सूची

1	विद्यालय के देदीप्यमान सितारे (2024-25)	9
2	रचनात्मक अधिगम गतिविधियां माध्यमिक विभाग	10-15
3	चयनित विद्यालयी गतिविधियों का निरूपण	16-26
4	हिन्दी अनुभाग	27-43
5	संस्कृत विभाग	44-50
6	अंग्रेजी अनुभाग	51-66
7	कला वीथिका	67-76
8	विद्यालयी घटनाएं जो समाचार बनीं	77-81
9	कर्मचारी सूची	82
10	विद्यालय परिवार	83

विद्यालय के देदीप्यमान सितारे सत्र 2024-25

कक्षा दसवीं

जैसमीन कौर
94.2%

महक
91.8 %

सौरभ कुमार
90.4%

कक्षा बारहवीं विज्ञान संकाय

आकाश खत्री
93%

कुनाल तिवारी
91%

साहिबप्रीत सिंह
90.2%

कक्षा बारहवीं वाणिज्य संकाय

महक
92.8%

जसनीत कौर खेरा
92.6%

एकमप्रीत कौर
84.4%

SECTION - A

Results

रचनात्मक अधिगम गतिविधियां माध्यमिक विभाग

विद्यालय में विगत सत्र *2024-25* में विविध गतिविधियों का संचालन पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों के रूप में संपन्न कराया गया। यहां विद्यार्थियों की प्रतिभा को अलग-अलग क्षेत्रों में परिमार्जित करने हेतु सदनानुसार अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित कराई गई। इन प्रतियोगिताओं में सदन पट्ट सज्जा, देशभक्ति परक समूह गान, समूह नृत्य, भाषण प्रतियोगिता हिन्दी-अंग्रेजी, कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता, हिन्दी कविता गायन, रंगोली तथा पोस्टर मेकिंग आदि प्रमुख रहीं। छात्र-छात्राओं को मंचीय प्रस्तुतियों के कौशल हेतु तैयार करा उनमें अभिव्यक्ति व सृजनशीलता जैसे गुणों को पल्लवित कर व्यक्तित्व विकास के अवसर प्रदान किए गए। सदन अनुसार एकल व समूह प्रतिस्पर्धाओं में विजेता रहे प्रतिभागियों का विवरण निम्नवर्णित तालिका के अनुक्रम में दृष्टव्य है -

सी.एल.ए. के अंतर्गत सदनानुसार संपन्न प्रतियोगिताओं में सदनों की अंकीय स्थिति (सत्र 2024-25)

क्र.सं.	प्रतियोगिता	दिनांक	शिवाजी	टैगोर	अशोक	रमन		शि.	टै.	अ.	र.
1	देशभक्ति परक एकल गायन	27.4.24	1	5	2	3		1	5	2	3
2	भाषण प्रतियोगिता -अंग्रेजी	4.5.24	3	1	2	5		4	6	4	8
3	सदन पट्ट सज्जा प्रतियोगिता	6.7.24	1	5	3	2		5	11	7	10
4	वाद-विवाद -हिन्दी	27.7.24	2	3	2	5		7	14	9	15
5	राखी मेकिंग	17.8.24	2	1	3	5		9	15	12	20
6	कवर डिजायन प्रतियोगिता	17.8.24	1	3	2	5		10	18	14	25
7	भाषण प्रतियोगिता- हिन्दी	7.9.24	1	5	3	2		11	23	17	27
8	मेंहदी डिजायन प्रतियोगिता	19.10.24	3	5	2	1		12	28	19	28
9	कविता गायन-हिन्दी	26.10.24	1	3	5	2		15	31	24	30
10	रंगोली	26.10.24	3	5	5	2		18	36	29	32
		योग	18	36	29	32		18	36	29	32
								4th	1st	3RD	2nd

वार्षिक समारोह 2024-25

सी. एल. ए. प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों के नामों की सूची (माध्यमिक विभाग)

क्र.सं.	प्रतियोगिता	दिनांक	विद्यार्थी का नाम व कक्षा	सदन	वर्ग	स्थान	अभ्युक्ति
1	देशभक्ति परक एकल गायन	27.4.24	समरप्रताप सिंह -vii A	अशोक	कनिष्ठ	प्रथम	
			दीपिका यादव -ix C	शिवाजी	वरिष्ठ	प्रथम	
			गौरी पराशर -vi अ	टैगोर	कनिष्ठ	द्वितीय	
			कनिका -ix C	टैगोर	वरिष्ठ	द्वितीय	
	नोट-कनिष्ठ वर्ग में दो सदन द्वितीय रहे		इशिका शर्मा -vii C	टैगोर	कनिष्ठ	तृतीय	
			सिद्धार्थ शर्मा -vii B	रमन	कनिष्ठ	तृतीय	
			अचिन्त -ix C	रमन	वरिष्ठ	तृतीय	
2	भाषण प्रतियोगिता -अंग्रेजी	4.5.24	सुजा-viii A	रमन	कनिष्ठ	प्रथम	
			अभिनीत झा -Xii A	शिवाजी	वरिष्ठ	प्रथम	
			रूपकमल -viii A	रमन	कनिष्ठ	द्वितीय	
			महक -xii C	रमन	वरिष्ठ	द्वितीय	
			प्रभजोत कौर -viii -C	टैगोर	कनिष्ठ	तृतीय	
			साधना -xii B	अशोक	वरिष्ठ	तृतीय	

3	[illegible]	[illegible]		टैगोर		प्रथम	
				रमन	------	तृतीय	
				अशोक	-----	द्वितीय	
4	वाद-विवाद -हिन्दी	27.7.24	प्रभजोत कौर -viii C	टैगोर	कनिष्ठ	प्रथम	
			महक -xii C	रमन	वरिष्ठ	प्रथम	
			रूपकमल -viii A	रमन	कनिष्ठ	द्वितीय	
			लविशा-IX C	अशोक	वरिष्ठ	द्वितीय	
			गुरलीन कौर -viii C	टैगोर	कनिष्ठ	तृतीय	
			अभिज्ञा शर्मा -IX C	अशोक	वरिष्ठ	तृतीय	
5	राखी मेकिंग	17.8.24	सुनिधि -viii B	रमन	कनिष्ठ	प्रथम	
			नवरीत -viii C	अशोक	कनिष्ठ	द्वितीय	
			मानवी -vii A	अशोक	कनिष्ठ	तृतीय	
6	कवर डिजायन प्रतियोगिता	17.8.24	आयुषी -IX स	रमन	वरिष्ठ	प्रथम	
			महिमा-IX A	रमन	वरिष्ठ	द्वितीय	
			सौम्या -IX B	रमन	वरिष्ठ	तृतीय	
7	भाषण प्रतियोगिता- हिन्दी	7.9.24	अमितोज सिंह -VI B	टैगोर	कनिष्ठ	प्रथम	
			मनमीत कौर -xii C	टैगोर	वरिष्ठ	प्रथम	
			तानिया रानी -VIII B	शिवाजी	कनिष्ठ	द्वितीय	
			ब्रजेश कुमार-XI A	टैगोर	वरिष्ठ	द्वितीय	
			गौरी पाराशर -VI B	टैगोर	कनिष्ठ	तृतीय	
			सेतज -IX B	शिवाजी	कनिष्ठ	तृतीय	

8	मेंहदी डिजायन प्रतियोगिता	19.10.24	ख्वैशी -VI B	टैगोर	कनिष्ठ	प्रथम	
			जसप्रीत कौर -X B	टैगोर	वरिष्ठ	प्रथम	
			अनन्या -VI B	टैगोर	कनिष्ठ	द्वितीय	
			प्रभालीन कौर-X A	टैगोर	वरिष्ठ	द्वितीय	
			अंजलि कुमारी	अशोक	कनिष्ठ	तृतीय	
			वर्षा -XI C	शिवाजी	कनिष्ठ	तृतीय	
9	कविता गायन-हिन्दी	26.10.24	आराध्य -VII C	टैगोर	कनिष्ठ	प्रथम	
			सनुजा गुप्ता -XI A	अशोक	वरिष्ठ	प्रथम	
			समर प्रताप सिंह -vii C	अशोक	कनिष्ठ	द्वितीय	
			महक -xii C	रमन	वरिष्ठ	द्वितीय	
			मयंक -VI B	अशोक	कनिष्ठ	तृतीय	
			लविशा – IX C	अशोक	कनिष्ठ	तृतीय	
10	रंगोली	26.10.24	अंजलि -IX C	टैगोर	-------	प्रथम	समूह
			समीता -IX A				
			आर्या -IX A				
			कुलजीत -IX C				
			स्नेहा -vii B				
			प्रियल -vii B				
			आकांक्षा -XI A	अशोक	-------	प्रथम	समूह
			ईशिका -X -B				
			जिया-IX B				
			ईशा -XI A				
			यामिनी -viii B				
			अरनप्रीत -viii C				
	(नोट-रंगोली में दो सदन प्रथम रहे।)						

LIST OF EXCELLENCE IN ACADEMICS 2023-24

S.NO.	CLASS	NAME	%	MARKS	position
1	CLASS- X	INDERJIT SINGH	96.2	481/500	1st
		ANIRUDH SETHI	95.4	477/500	2nd
		ABHAY TREHAN	94.4	472/500	3rd
2	CLASS- XII SCIENCE	SUPAN BALLU	91.8	459/500	1st
		DEVANS	90.2	451/500	2nd
		TARANJIT KAUR	87.2	436/500	3rd
3	CLASS-XII COMMERCE	TANVI KAUSHAL	88.6	443/500	1st
		ADITYA SINHMAR	88.2	441/500	2nd
		NAUREEN BHARDWAJ	86.2	431/500	3rd

LIST OF BEST STUDENTS IN DIFFERENT ACTIVITIES, 2024-25

S.NO.	ACTIVITY	NAME
1	BEST SCOUT & GUIDE OF THE YEAR	SCOUT - Prince Parsad
		GUIDE- Lavisha
2	BEST NCC CADET OF THE YEAR	Abhineet Jha (B)
		Sanuja Gupta (G)
3	BAND PARTY	Daksh Kaundal
		Ishveer
4	Best reader	Stuti Sabarwal
5	Best sports	Taranveer Singh
		Naureen Bhardwaj
6	Student of the year	Nancy
7	Inspire Awardee	Ayushi Ranjan

"विद्यालय में आयोजित कतिपय विशिष्ट गतिविधियों की संक्षिप्त झलकियां"

एक भारत, श्रेष्ठ भारत
वार्षिक रिपोर्ट

पीएम श्री केवी रेल कोच फैक्ट्री कपूरथला पंजाब एक भारत, श्रेष्ठ भारत के तहत युग्मित राज्य आंध्र प्रदेश के उप्पर पर वर्ष के दौरान विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गई। अप्रैल माह में पीएम श्री केवी मछलीपट्टनम(आन्ध्र प्रदेश) के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग आयोजित की गई।

विद्यालय स्तर पर युग्मित राज्य आंध्र प्रदेश के आधार पर ड्राइंग, नृत्य, गीत और लघु नाटिका गतिविधियाँ आयोजित की गई।

दिनांक 3 अक्टूबर को 'राष्ट्रीय एकता पर्व' में केंद्रीय विद्यालय संगठन चंडीगढ़ संभाग के अमृतसर संकुल अन्तर्गत आगत 8 केंद्रीय विद्यालयों से 202 प्रतिभागी विद्यार्थियों ने संकुल स्तरीय विविध प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता के केंद्र स्थल पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 (रे.डि.का.) हुसैनपुर में प्राचार्या रोज़ी शर्मा के नेतृत्व में सभी प्रतियोगिताएं निष्पक्ष व निर्विवाद संपन्न हुई । छात्र-छात्राओं द्वारा समूह नृत्य, समूह गान, शास्त्रीय गायन,पारंपरिक लोकगीत,ताल वाद्य संगीत, मधुर वाद्य संगीत,शास्त्रीय नृत्य,लोक नृत्य, दृश्य कला - द्वि आयामी, दृश्य कला - त्रि आयामी,देशी खिलौने व खेल और एकल अभिनय, पारंपरिक कहानी कथन, ऑन दा स्पॉट पेंटिंग, आर्ट इफिक्ट डिस्पले जैसी दर्जनभर से अधिक प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया गया। कार्यक्रम के प्रभारी शिक्षक श्री नरेंद्र कुमार शर्मा के संयोजन में सभी प्रतियोगिताएं प्रभावी रूप से पूर्ण कराई गई।

उल्लेखनीय है कि इस सत्र में प्रथम बार आयोजित हुई पारंपरिक कहानी कथन प्रतियोगिता में पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 हुसैनपुर की सनुजा गुप्ता प्रथम रहीं।

पुस्तकोपहार समारोह
पर्यावरण संरक्षण का संदेश

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में सत्र 2025- 26 के आरम्भ में विभिन्न कक्षाओं में पुस्तकोपहार कार्यक्रम के आयोजन द्वारा ज़रूरतमंद विद्यार्थियों को पुस्तक प्रदान करते हुए "कागज़ बचाओ, वृक्ष बचाओ" का जागरूकता भरा संदेश समाज को दिया गया। प्रार्थना सभा के दौरान आयोजित कराए गए इस विशिष्ट समारोह के विविध दिनों में प्राचार्या-उप प्राचार्या-मुख्याध्यापिका एवं शिक्षक गण विद्यार्थियों के साथ उपस्थित रहे। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्राचार्या रोज़ी शर्मा द्वारा उनकी सराहना तथा उत्साहवर्धन भी किया गया। जिन्होंने वर्ष भर पुस्तकों को भली भांति संभाल कर रखा तथा पर्यावरण के प्रति सजगता का परिचय देते हुए अपने कनिष्ठ भाई-बहिनों को पुस्तकें प्रदान की। प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उनके रखरखाव और सदुपयोग की सलाह भी दी गई। अन्त में इस नेक कार्य के लिए प्राचार्या द्वारा बच्चों तथा उनके अभिभावकों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए साधुवाद ज्ञापित किया गया।

स्वच्छता पखवाड़े के बैनर तले ' शिक्षक दिवस-2024' का आयोजन

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक *1(रेल डिब्बा कारखाना)* हुसैनपुर में *5* सितंबर को शिक्षक दिवस का समारोह पूर्वक आयोजन किया गया ।इस विशिष्ट अवसर पर भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को माल्यार्पण कर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन विद्यालय में संपन्न हुआ ।शिक्षकों के मनोरंजन के लिए विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया गया। शिक्षकों द्वारा कविता पाठ, भाषण ,नाट्य मंचन, प्रेरक विचार इत्यादि गतिविधियां प्रस्तुत की गईं। विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक अमरीक कुमार खलवाड़ा द्वारा प्रार्थना सभा में 'शिक्षकों का बेहतर समाज निर्माण में योगदान' विषयक वक्तव्य मुख्य रहा।

स्वच्छता पखवाड़े के पांचवें दिन स्वच्छता विषयक नियत गतिविधियां पूर्ण कराई गईं। छात्रों में स्वच्छता संवेदीकरण हेतु शिक्षकों द्वारा की गई नाट्य मंचन की प्रस्तुति बेहद मनोरंजक रही।कार्यक्रम समापन अवसर पर विद्यालय प्राचार्या रोजी शर्मा द्वारा शिक्षकों को शुभकामना संदेश प्रेषित करते हुए विद्यार्थियों द्वारा की गई तैयारी की सराहना की गई तथा कार्यक्रम को शत प्रतिशत सफल बताया गया।

'वरिष्ठ अभिभावक दिवस' का रंगारंग कार्यक्रम हुआ आयोजित

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1(रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में 30 नवंबर 2024 को वरिष्ठ अभिभावक दिवस समारोह मनाया गया। इस खास मौके पर विद्यालय परिसर में शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा मन को लुभाने वाली साज-सज्जा की गई। बच्चों ने दादा- दादी, नाना-नानी का तिलक लगाते हुए तथा वाद्ययंत्रों पर मनोरम राग निकालते हुए स्वागत किया। कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्या रोजी शर्मा तथा वरिष्ठ अभिभावकों द्वारा मां शारदा की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ की गई। मंच संचालक के रूप में प्राथमिक विभाग की पाठ्य सहगामी गतिविधि प्रभारी सुमन शर्मा ने ज्येष्ठ अभिभावकों का हमारे जीवन में योगदान विषय पर अपनी कुछ प्रभावशाली पंक्तियों के माध्यम से महत्त्व व्यक्त किया । इस अवसर पर बच्चों ने मन को लुभाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए है। वरिष्ठ अभिभावकों तथा बच्चों के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई। साथ ही वरिष्ठ अभिभावकों ने कई रोचक मुकाबलों में भाग लिया विजेताओं को विद्यालय प्राचार्या पारितोषिक दिए गए। कार्यक्रम के मध्य में वरिष्ठ महिला अभिभावक द्वारा "शब्द" गायन किया गया जो सभी उपस्थित जनों को मंत्र मुग्ध कर गया।

कार्यक्रम समापन पर संस्थाप्रधान के रूप में विद्यालय प्राचार्या द्वारा सभासदों को सम्बोधित कहा गया कि," पश्चिमी सभ्यता नई पीढ़ी पर हावी होती जा रही है इसलिए बच्चों में वरिष्ठ जनों के प्रति आदर सम्मान कम होता जा रहा है। संयुक्त परिवार में रहने वाले बच्चों का ज्यादा विकास हो रहा है ।बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए उम्र बुजुर्ग अभिभावकों से अपील की गई।"

इस दिवस को ज्ञानवर्धक मज़ेदार दिन के रूप में मनाया गया।

बच्चों के लिए यह पूरा दिन उत्साह भरा रहा। अन्त में प्राचार्या द्वारा व्यवस्थित, सुनियोजित एवं सफल कार्यक्रम के लिए सभी के योगदान की सराहना की गई।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह

दिनांक *21* फ़रवरी *2025* को विद्यालय में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाते हुए इस वर्ष की थीम- "मातृभाषा से प्रतिभा एवं क्षमता विकास।" को ध्यान में रखते हुए विविध क्रियाकलाप संपन्न कराए गए। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा संचालित हुए कार्यक्रम में बढ़चढ़ कर सहभागिता की गई। कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यालय प्राचार्या रोज़ी शर्मा द्वारा सभी को शुभकामना देते हुए अपना संबोधन मातृभाषा पंजाबी में दिया गया।

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने पंजाबी,कश्मीरी, भोजपुरी, पहाड़ी, हरियाणवी, कांगड़ी, राजस्थानी, ब्रज, गुजराती, उर्दू इत्यादि भाषाओं में अपनी रोमांचक प्रस्तुतियां दीं। मातृभाषा भाषा में परिचय के साथ- साथ कविता, चुटकुले,गिद्दा-बोलियां, गज़ल एवं गीत आदि प्रस्तुत किए गए।

समारोह के समापन अवसर पर उप प्राचार्या राजकुमारी मैडम द्वारा एक सफ़ल कार्यक्रम के लिए सभी प्रतिभागियों की सराहना व धन्यवाद भी अपनी मातृभाषा में करते हुए कार्यक्रम का समापन कर दिया गया।

स्थापना दिवस समारोह पूर्वक आयोजित हुआ

14 दिसम्बर 2024 को विद्यालय में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के 62वें स्थापना समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। इस विशिष्ट कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में विद्यालय प्रबंधन समिति के नामित अध्यक्ष मुनीश मेहता, पूर्व शिक्षक,अभिभावक तथा सरकारी एवं अन्य आदर्श संस्थाओं में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पूर्व छात्र-छात्राओं में डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, खिलाड़ी इत्यादि प्रमुख रूप से सम्मिलित रहे। विद्यालय प्राचार्या द्वारा सभी अतिथियों को हरित उपहार व सम्मान चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से आगत बहिन बी. के. नेहा की मोटिवेशनल स्पीच सभा में उपस्थित सभी जनों में ऊर्जा व प्रेरणा भरने वाली रही। शिक्षकों और छात्र-छात्राओं द्वारा विविध शैक्षणिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते हुए कविता, भाषण, चित्रकारी, स्वागत गीत, केंद्रीय विद्यालय गीत , भांगड़ा एवं अन्य रोचक कार्यक्रमों के माध्यम से समारोह को अर्श पर पहुंचा दिया ।

उल्लेखनीय है कि प्रतिवर्ष 15 दिसम्बर को केन्द्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस आयोजित किया जाता है लेकिन 15 दिसंबर को रविवार होने के 14 दिसम्बर को आयोजन संपन्न कराया गया।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में आगत विद्यालय प्रबंधन समिति के नामित अध्यक्ष द्वारा सभा को सम्बोधित करते हुए सभी को स्थापना दिवस की शुभ कामनाएं दी गई तथा गतिविधियों को उम्दा एवं उन्नत बताते हुए व्यवस्थित व सुनियोजित कार्यक्रम के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों की सराहना भी की गई।

समारोह के समापन अवसर पर विद्यालय प्राचार्या रोज़ी शर्मा द्वारा स्थापन दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सभी जनों को सफलतम कार्यक्रम के लिए बधाइयां दी गई।

हिंदी पखवाड़ा - 2024

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में दिनांक 14 से 28 सितंबर तक संचालित हिंदी पखवाड़े का समापन 28 सितंबर को संपन्न हुआ। विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के लिए 15 दिन की अवधि में संपन्न कराई गई प्रतियोगिताओं के विजेता एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन कर्ता प्रतिभागियों को विद्यालय प्राचार्या रोजी शर्मा द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस विशिष्ट अवसर पर उप प्राचार्या राजकुमारी, मुख्याध्यापिका वीना देवी शर्मा, शिक्षक गण व छात्र-छात्रा उपस्थित रहे । पखवाड़े की अवधि में प्राथमिक व माध्यमिक विभागों में विद्यार्थियों के लिए कविता पाठ, चित्रकारी ,भाषण, सुलेख ,नारा लेखन ,पुस्तक प्रदर्शनी, इत्यादि प्रतियोगिताएं तथा कर्मचारियों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी और हिंदी टंकण प्रतियोगिताएं आयोजित कराई गईं। सभी गतिविधियों में विद्यार्थी व शिक्षकों द्वारा वृहद स्तर पर की गई सहभागिता दर्शनीय रही ।

उल्लेखनीय है कि प्राचार्या द्वारा शैक्षणिक सत्र 2022-23 की दसवीं एवं बारहवीं की बोर्ड परीक्षाओं में उकृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाले शिक्षकों को भी संभाग स्तरीय स्वर्ण व रजत प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

पखवाड़े के समापन अवसर पर प्राचार्या द्वारा दिए गए अपने उद्बोधन में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के योगदान की सराहना करते हुए कर्मचारियों से अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किए जाने के अपील की गई। साथ ही उनके द्वारा पखवाड़े पर्यन्त सुव्यवस्थित, सुनियोजित गतिविधियों व प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए विद्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रशस्ति भी प्रमुखता से की गई।

बाल दिवस का समारोह

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1(रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में 14 नवंबर 2024 को बाल दिवस के रूप में आयोजित किया गया। इस खास मौके पर विद्यालय परिसर में शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा मन को लुभाने वाली साज-सज्जा की गई। कार्यक्रम की शुरुआत भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू के छायाचित्र पर प्राचार्या रोजी शर्मा द्वारा माल्यार्पण के साथ की गई। प्राथमिक विभाग की सी.सी.ए. प्रभारी सुमन शर्मा द्वारा बाल दिवस महत्त्व व परंपरा के बारे में बताया गया। बाल दिवस के अवसर पर बच्चों को आनंददायक एवं हर्षित करने वाला 'कठपुतली नृत्य' आयोजित कराया गया; जिसे देखकर बच्चों के चेहरों की खुशी का पारावार न रहा।

उल्लेखनीय है कि इस अवसर विशेष पर सामुदायिक भोज का आयोजन कराया गया; जिसमें सभी कक्षाओं ने विद्यालय के प्रांगण में वृत्ताकार बैठकर एक साथ भोजन का लुत्फ उठाया।अलग-अलग राज्यों के प्रसिद्ध स्वादिष्ट व्यंजन दिखाई दिए जो भारत की अनेकता में एकता को प्रदर्शित रहे थे।

इस अवसर पर प्रतिभा खोज शो के तहत नृत्य- गायन-वादन एवं अन्य कलाओं को मंचीय माध्यम से प्रस्तुति दी गई।

बालदिवस को ज्ञानवर्धक मज़ेदार दिन के रूप में मनाया गया और अन्त में बच्चों को मिष्टान्न वितरण किया गया।

बच्चों के लिए यह पूरा दिन उत्साह भरा रहा। कार्यक्रम की समाप्ति वरिष्ठ प्राथमिक शिक्षिका सविता साधु द्वारा 'बच्चे मन के सच्चे' गीत के साथ की गई।

वार्षिक खेलकूद दिवस समारोह- 2024

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1(रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में 19 दिसंबर को वार्षिक खेलकूद दिवस समारोह -2024 का आयोजन संपन्न हुआ। इस खास कार्यक्रम के मुख्यातिथि अजमेर सिंह, अर्जुन पुरस्कार विजेता(ओलंपियन) व सेवानिवृत्त वरिष्ठ खेल अधिकारी (आरसीएफ) रहे तथा विशेष अतिथि एस. एस. रावत, वरिष्ठ खेल अधिकारी (आरसीएफ) रहे। गौरतलब है कि इस विशेष अवसर पर अक्षय कुमार विद्यालय के पूर्व छात्र व विभिन्न प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में समारोह में उपस्थित रहे ।

दीप प्रज्वलन उपरांत प्राथमिक विभाग के नन्हें-मुन्ने बच्चों द्वारा स्वागत गान की प्रस्तुति देते हुए सबका मन हर्षित कर दिया।

प्राचार्या रोज़ी शर्मा द्वारा आगंतुक अतिथियों का औपचारिक स्वागत करते हुए और उन्हें हरित उपहार व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

वर्तमान सत्र में आयोजित केन्द्रीय विद्यालय संगठन की संभाग स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया।

वार्षिक खेलकूद समारोह के मौके पर कुल 380 प्रतिभागियों ने विविध खेल-कूद प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। आयोजित 29 प्रतियोगिताओं में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए भी अलग-अलग प्रतियोगिताएं शामिल रहीं। इन सभी स्पर्धाओं में विजेता रहे विद्यार्थियों को ट्रॉफी व मेडल पहनाते हुए अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया।

मुख्यातिथि द्वारा दिए गए संदेश में सभी जीतने वालों को बधाई के साथ-साथ अन्य विद्यार्थियों को भी खेलकूद गतिविधियों में भाग लेने की अपील की गई। साथ ही उनके द्वारा व्यवस्थित कार्यक्रम के लिए संस्था प्रधान के रूप में प्राचार्या, खेलकूद शिक्षक वेंकट रमन तथा खेल प्रशिक्षकद्वय गगन दीप सिंह और अपुल काला की सराहना की गई।

उप प्राचार्या राजकुमारी जी द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

और अंत में विद्यार्थियों द्वारा किए गए पंजाब के लोकनृत्य भांगड़ा के रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समारोह का समापन किया जाना दर्शनीय रहा।

आशीर्वाद और विदाई समारोह
कक्षा बारहवीं, 2024-25

विद्यालय में 11 फ़रवरी 2025 (मंगलवार) को प्राचार्या श्रीमती रोज़ी शर्मा के कुशल नेतृत्व में कक्षा बारहवीं की विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के कुल 70 विद्यार्थियों का आशीर्वाद और विदाई समारोह विद्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्या जी के साथ-साथ उप प्राचार्या श्रीमती राजकुमारी एवं कक्षा बारहवीं के तीनों वर्गों में अध्यापन करने वाले शिक्षकों की सहभागिता एवं विदा ले रहे विद्यार्थियों को दिए जाने वाले आशीर्वाद श्लाघनीय रहे।

विशेष समारोह के प्रारंभ में प्राचार्या जी का संबोधन तदुपरांत शिक्षकों के आशीर्वादात्मक वक्तव्य, विद्यार्थियों के साझा किए गए अपने अनुभव सविशेष रहे। कार्यक्रम के मध्य में विद्यालय प्रशासन द्वारा विदा ले रहे विद्यार्थियों के लिए स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई। समारोह के उपान्तचक्र में प्राचार्या व उप प्राचार्या जी के कर कमलों से विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न भी भेंट किए गए ताकि छात्र-छात्रा विद्यालय में व्यतीत किए स्वर्णिम पलों को अपनी चिरस्मृतियों में सहेज कर रख सकें। कार्यक्रम के समापन अवसर पर उप प्राचार्या जी का दिया गया संबोधन विशेष रहा।

इस विशिष्ट समारोह का कुशल प्रबंधन तथा मंच संचालन संबंधी दायित्व पाठ्य सहगामी गतिविधि प्रभारी श्री राजेश कुमार शर्मा, स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी) द्वारा निर्वहन किया गया।

Section- B

हिन्दी

अनुभाग

गुस्से का आईना

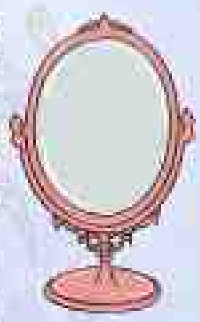

एक छोटी सी लड़की थी, उसका नाम था परी, वो बात-बात पर गुस्सा होती थी। उसकी मां उसे हमेशा समझाती रहती कि 'परी बेटा, इतना गुस्सा करना अच्छी बात नहीं है, लेकिन फिर भी उसके स्वभाव में कोई बदलाव नहीं आया। एक दिन परी अपना होमवर्क करने में व्यस्त थी। उसकी टेबल पर एक सुंदर-सा फूलों से सजा पॉट रखा था। तभी उसके छोटे भाई का हाथ उस पॉट से टकराया और गिरने पर उसके कई टुकड़े हो गए।

अब क्या, परी गुस्से से बौखला उठी। तभी वहां उसकी मां ने एक आईना लाकर उसके सामने रख दिया। अब गुस्से से भरी परी ने अपनी शक्ल आईने में देखी, जो कि गुस्से में बहुत ही बुरी लग रही थी। अपना ऐसा बिगड़ा चेहरा देखते ही परी का गुस्सा छू-मंतर हो गया। तब उसकी मां ने कहा, देखा परी! गुस्से में तुम्हारी शक्ल आईने में कितनी बुरी लगती है, क्योंकि आईना कभी झूठ नहीं बोलता। अब परी को पता चल गया था कि गुस्सा करना कितना बुरा होता है। तभी से उसने गुस्सा न करने का एक वादा अपने आप से किया।

ऐशमीन कौर
पंचम अ

मूंगफली का बंटवारा

एक जंगल में मीनू बंदर और बबलू भालू अच्छे दोस्त थे। एक दिन उन्हें जंगल में एक बड़ा मूंगफली का थैला मिला। मीनू बंदर ने झट से थैला उठाया और बोला, "चलो, इसे आधा-आधा बाँट लेते हैं!" बबलू भालू ने सहमति में सिर हिलाया।

मीनू ने आधी मूंगफली बबलू को दी और बाकी खुद रख ली। लेकिन बबलू ने देखा कि मीनू ने बड़ी मूंगफली अपने पास रख ली थी, और उसे छोटी-छोटी मूंगफली दी थीं। बबलू ने इस पर कुछ नहीं कहा और खुशी से मूंगफली खाने लगा। यह देखकर मीनू को अजीब लगा और उसने पूछा, "तुमने मुझे कुछ कहा क्यों नहीं?"

बबलू मुस्कुराया और बोला, "दोस्ती में चीजों का आकार नहीं, प्यार और सम्मान मायने रखता है।" मीनू को अपनी गलती का एहसास हुआ, और उसने बबलू से माफी मांगी।

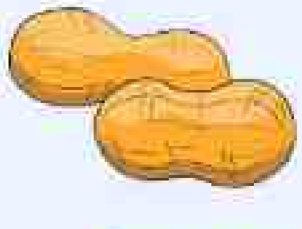

सीख: सच्ची दोस्ती में बराबरी और ईमानदारी होना जरूरी है।

इशमीत कौर
चतुर्थ स

सच्चा मित्र कौन ?

बहुत समय पहले की बात है। दो बहुत पक्के दोस्त थे। एक बार वे जंगल से गुजरते हुए खतरनाक रास्ते से जा रहे थे। वह रास्ता बिलकुल एकांत स्थान वाला था। जैसे-जैसे सूरज ढलने लगा, उन्हें डर लगने लगा, लेकिन उन्होंने एक-दूसरे का साथ नहीं छोड़ा।
तभी अचानक उन्होंने देखा कि सामने से एक भालू आ रहा है, एक दोस्त सबसे नजदीकी पेड़ की ओर दौड़ा और फटाफट ऊपर चढ़ गया, लेकिन दूसरा पेड़ पर चढ़ना नहीं जानता था इसलिए वह मरे हुए व्यक्ति के समान नाटक करते हुए जमीन पर लेट गया। भालू जमीन पर पड़े लड़के के पास गया और उसके सिर के चारों ओर सूंघने लगा। लड़के को मरा हुआ जानकर, भालू आगे बढ़ गया।

अब पेड़ पर चढ़ा दोस्त नीचे उतरा और उसने अपने दोस्त से पूछा कि भालू ने उसके कान में क्या कहा? दूसरे दोस्त ने जवाब दिया, 'उन दोस्तों पर कभी भी भरोसा मत करना जो तुम्हारी परवाह नहीं करते हैं। जो मुसीबत में खुद की जान बचाए और दूसरे के काम ना आए वो कैसा दोस्त।' अब पहले दोस्त को अपनी गलती का अहसास हो गया और उसने अपने मित्र से माफी मांगते हुए कहा- माफ करना दोस्त, मैं अपनी गलती पर शर्मिंदा हूं।

कमल नयन
तृतीय ब

पहाड़ व गिलहरी

पहाड़ और गिलहरी में झगड़ा हुआ, और पहाड़ ने पहाड़ को "छोटा बदमाश" कहा। बन ने जवाब दिया,

"तुम निःसंदेह बहुत बड़े हो; लेकिन एक वर्ष और एक क्षेत्र बनाने के लिएसभी प्रकार की चीजों और मौसम को

एक साथ लेना पड़ता है । और मुझे लगता है कि मेरी जगह लेना कोई अपमान की बात नहीं है। अगर मैं तुम्हारे जितना बड़ा नहीं हूँ, तो तुम भी मेरे जितने छोटे नहीं हो, और आधे भी फुर्तीले नहीं हो: मैं इनकार नहीं करूँगा कि तुम एक बहुत सुंदर गिलहरी का रास्ता बनाओ। प्रतिभाएँ अलग-अलग होती हैं; सब कुछ ठीक है और समझदारी से कहा जाए; अगर मैं अपनी पीठ पर जंगल नहीं ढो सकता, तो तुम भी अखरोट नहीं तोड़ सकते।”

सपनों का तकिया

अब सारे फूल मुड़े हुए हैं, और अँधेरा जा रहा है।

शाम हो रही है... आराम करने का समय हो गया है।

जब मैं सो रहा होता हूँ तो पाता हूँ कि मेरा तकिया सपनों से भरा है। वे सभी नए सपने हैं: मेरे बादल से होकर आने से पहले किसी ने मुझे ये नहीं बताए थे । वे आकाश को याद करते हैं, मेरे छोटे-छोटे सपने, उनके पास पंख हैं, वे तेज़ हैं, वे मीठे हैं। मुझे अपने सपने दूसरे बच्चों को बताने में मदद करें, ताकि उनकी रोटी का स्वाद सफेद हो, ताकि वे जो दूध पीएं वह उन्हें तारों वाले आकाश में घास के मैदानों के बारे में सोचने पर मजबूर कर दे । मुझे दूसरे बच्चों को रोटी देने में मदद करें ताकि उनके सपने वापस आ सकें: ताकि उन्हें याद रहे कि बादल से होकर आने से पहले वे क्या जानते थे। मुझे अंधेरे में उनके नन्हे हाथ थामने दो, अकेले बच्चों को, उन शिशुओं को जिनकी अब कोई माँ नहीं है। प्यारे भगवान, मुझे अपना चाँदी का प्याला पकड़ने दो ताकि वे पी सकें, और उन्हें अपने सपनों की मिठास बता सकूँ

सिया
पंचम स

गोदान की समीक्षा-मेरी दृष्टि में

गोदान उपन्यास के प्रणेता : मुंशी प्रेमचंद का मूल नाम धनपतराय था |इनका जन्म 31 जुलाई 1880 में बनारस के लमही गाँव में हुआ | इनकी साहित्यिक रचनाओं में कुल 320 कहानियाँ और 14 उपन्यास शुमार हैं |प्रेमचंद एक युग प्रवर्तक लेखक थे |

उपन्यास सम्राट की उपाधि से सम्मानित प्रेमचंद के लेखन में शहरी ,कस्बाई,और देहाती जीवन के सजीव चित्र हैं |प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य जगत को मंत्र ,पूस की रात ,कफ़न ,ठाकुर का कुआँ ,पञ्चपरमेश्वर ,शतरंज के खिलाड़ी जैसी कहानियाँ दी हैं |प्रेमचंद का संपूर्ण जीवन निर्धनता और दुःखों में बीता था|केवल 56 वर्ष की आयु में ,8 अक्तूबर 1936 को मुंशी प्रेमचंद जी का निधन हो गया |

गोदान : यूँ तो मुंशी प्रेमचंद की प्रत्येक रचना जन-जीवन को आइने की तरह दर्शाती है;परन्तु 'गोदान' हिन्दी साहित्य की अमूल्य रचना है |संसार की शायद कोई भाषा न होगी ,जिसमें यह उपन्यास न लिखा गया हो|वर्षों पुराना होने के बावजूद भी इस उपन्यास को वही दर्जा मिलता है जो पहले था| गोदान को पढ़ते समय ऐसा लगता है कि यह कहानी जैसे हमारे आस-पास की ही हो|

यह कहानी होरी और धनिया नामक एक कृषक दम्पति के इर्दगिर्द घूमती है|किसी भी ग्रामीण की भाँति होरी की भी हार्दिक अभिलाषा है कि उसके पास भी एक पालतू गाय हो जिसकी वह सेवा करे |इस दिशा में किये गए होरी के प्रयासों से शुरू होकर यह कहानी कई सामाजिक कुरीतियों पर आघात करती हुई आगे बढ़ रही है |गोदान जमींदारों और स्थानीय साहूकारों के हाथों गरीब किसानों का शोषण और उनके अत्याचार की सजीव व्याख्या है |भारतीय जनजीवन का सुन्दर चित्रण समाज के अलग-अलग वर्गों के प्रति लेखक की प्रगतिशील दृष्टि और किसानों के बुरे हालातों का ऐसा मार्मिक वर्णन पढ़ना ही अपने आप में एक अलग अनुभव है |इसके साथ-साथ ही शहरी और नवकृत वर्ग की एक कथा इस ग्रामीण कथा के साथ चलती है |कहानी के शहरी युवा नायकों के मन के भाव उनके व्यवहार्यताओं के प्रति कर्मबोध होने की उनकी यात्रा को दर्शाया गया है|कहानी का अंत दुःखद है और पाठक के लिए कई सवाल छोड़ जाता है |

गोदान को यहाँ ना सिर्फ एक अच्छी और संवेदनशील कहानी को पढ़ने के शौक से पढ़ा जा सकता है वहीं दूसरी ओर इसमें दर्शायी गई विचारधाराएँ ,नीतियाँ और आदर्श भी मन पर गहरी छाप छोड़ने की सामर्थ्य रखते हैं |हो सकता है कि प्रेमचन्द के कई विचारों से आप सहमत न भी हों पर उस समय में लिखा गया यह उपन्यास पढ़कर आप निराश नहीं होंगे |यह उपन्यास आज विश्वव्यापी कोरोना महामारी के चलते जनों के यत्र-तत्र विचरण के सरकारी प्रतिबन्ध तथा अपनी स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, जहाँ कोई बाहर नहीं जा रहा ऐसी अवस्था में पठन हेतु सर्वोत्तम विकल्प के रूप में देखा जा सकता है |

महिमा सिंह
कक्षा – दसवीं 'ब'

जीवन में संस्कारों का महत्त्व

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विजः उच्चयते।
वेदपाठात् भवेद् विप्रः ब्रह्म जानातीति ब्राहमणः ।। मनुस्मृतिः

हम सभी जीवन के आरंभिक क्षणों में अपरिष्कृत-अपरिमार्जित मनुष्य होते हैं। और जब हमारा जीवन संस्कार-सदाचार-शिष्टाचार से परिपूर्ण होता है तब हम परिष्कृत-परिमार्जित-प्रांजल हो संस्कार संपन्न बन शूद्रत्व से द्विजत्व भाव को प्राप्त होते हुए श्रेष्ठता व महानता के चरम पर होते हैं।अतः प्रत्येक मनुष्य के जीवन में संस्कारों का अतीव महत्त्व है। हमारे अपने संस्कार ही हमें पशुता से अलग कर मनुजता की श्रेणी में ला खड़ा करते हैं।

इसीलिए भारतीय सनातन परंपरा में गर्भधान से अंत्येष्टि तक षोडश संस्कारों का वर्णन मिलता है। आज आधुनिकता और पाश्चात्य प्रभाव के चलते हम उन्हें लगभग विस्मृत कर बैठे हैं जो हमारे पतन का कारण बन रहा है।यह स्वयं सिद्ध है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में संस्कारों का अत्यधिक महत्त्व है। मेरा मानना है कि सभी के लिए संस्कार इसलिए भी आवश्यक हैं क्योंकि -

संस्कारों से व्यक्तित्व का विकास, दैवीय गुणों का आविर्भाव, आन्तरिक शक्तियों का उन्नयन, नैतिकता का विकास संभव हो पाता है। संस्कारवान मनुष्य जीवन में सफल और धन्य होते हुए सार्थकता को प्राप्त करता है। वह जीवित रहते हुए धर्म-अर्थ-काम इन तीन पुरुषार्थों का तथा मृत्यु के बाद मोक्ष पद का अधिकारी भी होता है। किसी ने कितना ठीक और सटीक कहा है कि – "पूरी दुनिया जीत सकते हैं संस्कार से और जीता हुआ भी हार जाते हैं अहंकार से।" अधिक क्या कहूँ- इस विषय में ऐतिहासिक उदाहरण हमारे आदिकाव्य रामायण में राम और रावण के व्यक्तित्व से क्रमशः लिया जा सकता है। सोच भले ही नयी रखो पर संस्कार पुराने ही अच्छे हैं। अतः हमें हमारे पूर्वजों द्वारा दिए गए संस्कारों को पाश्रत्य प्रभाव के चलते कदापि भुलाना नहीं चाहिए। हमारे अच्छे संस्कारों से ही अच्छी सृष्टि का निर्माण संभव है।

चलें साथ और बोलें साथ, दिल से दिल मिल जिएँ साथ।
अच्छे कर्म करें हम साथ, भेद के साथ बजे ना नाद ।।-2

संस्कार हममें होना इसलिए भी आवश्यक है ताकि हम एक दूसरे की भावना को समझ सकें। एक दूसरे की सहायता कर सकें। यह किसी भाषण या प्रवचन से विकसित नहीं होते अपितु इनकी शुरुआत घर से तथा समझ विद्यालय से विकसित होती है।

और अंत में मैं अणुव्रत गीत की चयनित इन बेहतरीन पंक्तियों से संस्कार विषयक लेख का अवसान करना चाहूँगा –

नैतिकता की सुर सरिता में ,
जन जन मन पावन हो।
संयममय जीवन हो
अपने से अपना अनुशासन अणुव्रत की परिभाषा,
वर्ण जाति या संप्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा।
छोटे छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो।
संयममय जीवन हो
मानवीय आचार संहिता में अर्पित तन मन हो।
ये तब संभव जब जीवन में संस्कार प्रबल हों।-2

सिद्धार्थ शर्मा
कक्षा -आठवीं 'ब'

गोस्वामी तुलसीदास

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के काल विभाजन को मानें तो हिन्दी साहित्य को उनके द्वारा आदिकाल ,पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल),उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) और आधुनिक काल (गद्य काल)के क्रम से चतुर्धा विभाजित किया गया |अतः भक्तिकाल जिसका अपर नाम पूर्वमध्य काल भी है |इस भक्तिकाल की कालावधि में हिन्दी साहित्य आकाश में रामभक्ति शाखा की सगुण काव्यधारा के सुप्रसिद्ध महाकवि ,लेखन के क्षेत्र में भक्ति ,नीति एवं सूक्ति की त्रिवेणी के वाहक महाकवि तुलसी दास जी का जन्म सन् 1522 में हुआ |हिन्दी साहित्य के इस प्यारे-दुलारे कवि के अंत:साक्ष्यों के आधार पर व्यक्तित्व ,कृतित्व एवं जीवन काल के विषय में कम ही ज्ञात हो पाता है |अतः इनके जन्म स्थान आदि को लेकर अनेक मत प्रचलित हैं परन्तु वर्तमान समय में घट रामायण के रचयिता एवं रामगुलाम द्विवेदी जी ने गोस्वामी जी का जन्म वर्ष 1589 विक्रम स्वीकार किया है |वर्तमान में 1589 ही मान्य है |वैसे ही जन्म स्थान के विषय में कतिपय विद्वान हाजीपुर कुछ राजापुर कुछ सोंरो एवं कुछ अयोध्या स्वीकार करते हैं | परन्तु राजापुर या उसके निकटस्थ ही उनके जन्म स्थान को आज विद्वन्मण्डल मान्यता देता है|

इनके पिता आत्माराम दुबे तथा माँ हुलसी थीं |यह जाति से सरयूपारीण ब्राह्मण थे |इनके जन्म के समय कुछ विचित्र घटनाओं का होना जैसे - इनका माँ के गर्भ में बारह महीनों तक रहना ,जन्म के समय मुँह में पूरे 32 दाँतों की उपस्थिति ,जन्म के समय 5 वर्ष के बालक की भाँति डीलडौल का होना तथा जन्मते ही मुँह से 'राम' शब्द का उच्चारण किया जाना इत्यादि से अमंगल की आशंका से भयभीत माँ द्वारा इनका परित्याग करते हुए अपनी दासी चुनियाँ को इन्हें सौंप दिया गया और कुछ ही दिनों के बाद माँ का देहांत हो गया |इनका ऐसी परिस्थितियों में दासी द्वारा पालन-पोषण किया जाता है| जब ये साढ़े पाँच वर्ष के हुए तो दासी का भी संसार छोड़ परलोक गमन हो गया तथा बालक का अनाथ होकर दर-दर भटकना तथा भगवान शंकर की प्रेरणा से नरहरि आनन्द जी ने इस बालक को अपना संरक्षण दिया | तुसलीदास जी द्वारा इनको अपने गुरु के रूप में स्वीकार किया गया ,बालक का राम भक्ति की ओर झुकाव देखकर गुरुजी द्वारा इनका नाम 'रामबोला' रख दिया गया|गुरु के साथ इनका अधोध्या जाना तथा हिन्दू-संस्कृति के षोडश संस्कार विधान के अनुसार प्रारंभिक यज्ञोपवीत तक के पाँच संस्कार कराए गए और इन्हें 'राममंत्र' की दीक्षा दी गई |ये अपने गुरु के आश्रम में विद्या ग्रहण करते रहे प्रखर बुध्धि होने के कारण एक बार गुरु मुख से जो सुन लेते वह इन्हें कंठस्थ हो जाता | इनके द्वारा अपने गुरु के साथ सोंरो जो पूर्व में शूकर क्षेत्र के नाम से नाम से जाना जाता था वहाँ जाया जाता है और गुरु द्वारा इन्हें रामचरित सुनाया जाता है |शूकर से वाराणसी प्रस्थान कर इन्होंने लगभग 15 वर्षों तक शेष सनातन जी के सानिध्य में वेद-वेदांगों का अध्ययन किया |वाराणसी से अध्ययन उपरांत ये अपने जन्म स्थान शूकर क्षेत्र पहुँचे वहाँ पहुँचकर अपने दिवंगत माता-पिता का श्राद्ध तर्पण आदि कर भगवन राम की कथा सुनाने लगे |

संवत् 1583 को भारद्वाज गोत्रीय सुन्दरी कन्या से इनका विवाह संपन्न होना तथा उनके द्वारा सांसारिक जीवन की नश्वरता तथा क्षणभंगुरता के विषय दिए गए उपदेश से जीवन के प्रति मोहभंग होना व विरक्ति की भावना से प्रयाग की ओर प्रस्थान करना तथा गृहस्थ जीवन का परित्याग कर काषाय वस्त्र धारण कर प्रयाग से काशी पहुँचने पर इनका मिलन अंजनिपुत्र पुत्र हनुमान से होता है। तुसलीदास जी द्वारा हनुमान जी से श्री रघुनाथजी के दर्शन कराए जाने का आग्रह किया जाता है। वहाँ हनुमान जी द्वारा उन्हें संकेत दिए जाता है की चित्रकूट में आपको रघुनाथजी के दर्शन होंगे।

शास्त्र सम्मत ऐसा उल्लेख मिलता है कि संवत् 1607 की मौनी अमावस्या के दिन ये महान कवि ,संत शिरोमणि अपने दिव्य आलोक को समाप्त कर यथार्थ में संसार को अमावस्या के अंधरे में छोड़ गए । परन्तु उनकी ख्याति उनके द्वारा लिखित साहित्य के रूप में आज भी विद्यमान है। तुलसीदास जी द्वारा लिखित अन्य रचनाओं को यदि कुछ समय के लिए भूल भी जाँए तो उनका अकेला रामचरित मानस ग्रन्थ ही उनकी प्रतिभा को प्रकट करने हेतु काफी है; जिसमें विविध पुराण,निगम-आगम , वाल्मीकि रामायण में कथित बातों तथा यत्र तत्र अन्यत्र विखरी अन्य सुंदर बातों विचारों का मंजुलता पूर्वक समायोजन तथा बखान किया गया है। वह उनके अनुसार स्वान्तसुखाय अर्थात अपने सुख के लिए लिखा गया बतलाया गया है परन्तु आज हम जैसे सामान्य जन उनके इस ग्रन्थ को न केवल धार्मिक अपितु मार्मिक तथा उपदेशपरक शास्त्र के रूप में देखते हैं। मैं एक पाठक के रूप में जब भी इसे धार्मिक भावना से ओतप्रोत हुआ पढ़ता हूँ तब-तब मुझे इस ज्ञान-अर्णव से नए-नए मोती प्राप्त होते हैं। मैं ऐसे प्रतिभा संपन्न महाकवि के प्रति नतमस्तक हूँ।

प्रिंस शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक(भौतिक शास्त्र)

बर्फी का गुनाहगार

हम चार दोस्तों ने तय किया कि इस बार अपने दोस्त सुखी के घर धावा बोला जाए। बहुत दिनों से वह हमें अपने गाँव में आने का न्योता दे रहा था। इतवार का दिन तय हुआ और हम सब दिल्ली से डी. टी. सी. बस पकड़कर सोनीपत के उस गाँव की ओर चल पड़े जहाँ हमारा मित्र सुखी बड़े सुख से रह रहा था।
वह हमें लेने के लिए गाँव के स्टैंड पर आया और बड़े आदर सत्कार के साथ घर पर ले गया। यहाँ से शुरू होता है हमारी मेहमान नवाज़ी का पहला चरण। कमरे में हुक्के पर जलती चिलम मानो हमारा इस्तक़बाल कर रही हो कि इतने दिन कैसे लगा दिए आने में? हुक्के का शौक तो हमे में से किसी को नही था मगर एक दो घूँट मारने में क्या हर्ज था और साथ में स्टेटस पर लगाने के लिए फ़ोटो भी तो मिल जाएगी। ताबड़तोड़ सेल्फी का सिलसिला चल ही रहा था के बीच में मिट्टी के ग्लास में उफनती हुई लस्सी आयी जिसको देखकर हमारा मन गदगद हो उठा। होता भी कैसे न मक्खन जो मछली की तरह ऊपर तैर रहा था। ग्लास हाथ में लिया ही था कि पीछे पीछे भाभी जी के हाथों के गरमा गरम पराठों की तश्तरी देखकर मुँह में पानी आ गया। (आह ! हा!)
मुझसे तो बिल्कुल भी सब्र न हुआ मैं हुक्का छोड़कर झट से दस्तर खान पर आ धमका और फिर एक के बाद एक पकवान दस्तर खान पर ऐसे लगाए गए जैसे वह हमें घूर रहे हो...। हम भी अपनी पैनी नज़रें उन पर गड़ाए हुए थे और प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब बिगुल बजे और हम पेट पूजा करके काम दूजा करें। आख़िर में जिस चीज़ के हमें दीदार हुए वो थी घर के बने हुए खोये की बर्फी जिसने दस्तर खान पर आते ही चार चाँद लगा दिए। हम जैसे ही बर्फी पर झपटने वाले थे अचानक से बिजली नाराज़ होकर चली गयी। मानो काले अंधेरे ने सफेद बर्फी पर पर्दा डाल दिया और जिसके हाथ जितने टुकड़े लगे उसने गायब कर दिए। हम सब शांति से अपना काम कर ही रहे थे कि पिताजी कमरे में आये और कहने लगे; "बेट्टा बीजली का कोई भरोसा कोनि आन ने तो इभी आजा गी न तो सांझ न भी नि आवे"। मैं तो कब से इसी तरह के आदेश की तलाश में था.
मैंने जैसे ही बर्फी का पहला पीस उठाकर मुहँ में रखा कि कमरे में रोशनी हो गयी (धत,... इसको भी अभी आना था, अन्धेर में जितना मर्जी बर्फी ठूस लेते।) पिताजी की नजर सबसे पहले बर्फी की खाली प्लेट पर गयी और उसके बाद मेरे मुंह पर, जब तक मैं कुछ समझ पाता वो बोल पड़े कि बेट्टा आराम से खाओ मैं और लेकर आता हूँ। इतना सुनते ही मैं शर्म से पानी पानी हो गया।
जैसे ही हम वहाँ से घर की तरफ़ वापस चले तो बाहर आते ही जिक्र ए बर्फी शुरू हो गया,
सबसे पहले मैंने बताया कि "एक ही हाथ लगी उसी में पकड़ा भी गया जैसे सारी मैंने ही खायी हों" दूसरा दोस्त बोला, "अरे भाई अँधेरे का फ़ायदा तो मुझे भी ना हुआ दो ही खा सका की तीसरी तक प्लेट खाली पायी" तीसरे ने बुरा सा मुँह बना कर कहा, एक टुकड़ा खा कर जैसे ही हाथ दूसरी पर बढ़ाया तो वहाँ पहले से ही दूसरे का हाथ मौजूद था, उँगलियों की जंग हुई और बर्फी एक राज्य की तरह दो हिस्सों में बट गई, इस तरह आधी और मिली।
चौथा दोस्त जो अभी तक खामोश था और मुस्कुरा रहा था।
बाक़ी सब उसकी शातिराना मुस्कुराहट देख कर बोले, तुझे क्या हुआ बे..??
उसने गले में अटकी बर्फी निगलते हुए कहा, हक़ीक़त में बर्फी इतनी टेस्टी थी कि मुझसे ज्यादा मेरी जेब ने खायी। एक कुटिल हंसी के साथ बर्फी से भरी जेब दिखा कर वो दोस्त बहुत तेज़ी से भागा और हम सब उसके पीछे पीछे.......।

श्री अतहर जमाल
सहायक कर्मचारी

काम नहीं रुकता

कहा एक दिन दाल बहिन ने,
छुट्टी आज मनाऊंगी।
किसी थाल में चावल के संग,
आज नहीं मैं जाऊंगी।

चावल बोला अरी निगोड़ी,
क्यों घमंड इतना करती,
बोली है तरकारी मुझसे,
हर दम साथ निभाऊंगी।

क्यों डरते हो चावल भैया,
मैं तेरी हमराही हूं,
बहिन कढ़ी भी यह बोली है,
काम तुम्हारे आऊंगी।

कभी किसी के बिना जगत का,
काम नहीं रुकता भाई।
एक छोड़ दे साथ अगर तो,
मदद दूसरे से आई।

हरमीत कौर
पंचम अ

ताली खूब बजाएंगे

चींटी एक आई पूरब से,
एक आ गई पश्चिम से।
हुई बात कानों कानों में,
रुकीं जरा दोनों थम के।

बोली एक, कहां जाती हो,
कहीं नहीं दाना पानी।
चलें वहां पर जहां हमारे,
रहते हैं नाना नानी।

गर्मी की छुट्टी है दोनों,
चलकर मजे उड़ाएंगे।
नानाजी से अच्छा वाला,
बर्गर हम मंगवाएंगे।

कहा दूसरी ने, पागल हो !
वहां नहीं हमको जाना।
हाथी घूम रहा गलियों में,
चलकर उसको चमकाना।

'घुसते अभी सूंड़ में तेरी,'
यह कहकर धमकाएंगे।
भागेगा वह इधर उधर तो,
ताली खूब बजाएंगे।

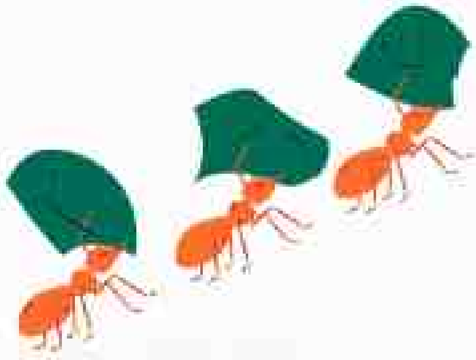

दो दिन का मेला (कविता)

अभी डाल में फूल खिला है,
इतराता है फूला फूला।
उसे पता है कुछ घंटों में,
बिखर जाएगा यह घरघूला।

पल दो पल के इस जीवन में,
फिर क्यों जिएं उदासी ओढ़े।
क्यों न फर्राकर दौड़ाएं,
मस्ती के, खुशियों के घोड़े।
कलियों पत्तों और हवा के,
अभी सामने तथ्य कबूला।

झूम-झूम कर लगा झूलने,
फिर-फिर वह हंस-हंसकर झूला।
छोड़ी दुनिया की चिंताएं,
भूत भविष्य सभी कुछ भूला।
झूले पर ही लगा नाचने,
मटका-मटका कर वह कूल्हा।

उसकी मस्ती देख पत्तियों,
डालों ने भी होश गवाएं।
ऊपर-नीचे आगे पीछे,
अगल-बगल में मुंह मटकाए।

छोड़ झमेले नाचो गाओ,
दुनिया तो दो दिन का मेला।

गरिमा मीना
चतुर्थ स

छोटी-छोटी बातें कविता

पानी की छोटी-छोटी बूंदें,
रेत के छोटे-छोटे कण, मिलकर
विशाल महासागर
और रमणीक भूमि बनाते हैं।

अत: ये छोटे-छोटे क्षण,
भले ही वे विनम्र हों, अनंत काल के
महान युगों का निर्माण करते हैं ।

अत: छोटी-छोटी गलतियाँ
आत्मा को
पुण्य के मार्ग से दूर,
पाप की ओर भटका देती हैं।

दयालुता के छोटे-छोटे कार्य,
प्रेम के छोटे-छोटे शब्द,
पृथ्वी को खुश करने में मदद करते हैं,
ऊपर स्वर्ग की तरह।

खुशरीत कौर
तृतीय स

वह लड़का जो कभी झूठ नहीं बोलता था

एक बार एक छोटा लड़का था,
घुंघराले बाल और सुखद आँखें वाला -
एक लड़का जो हमेशा सच बोलता था,
और कभी झूठ नहीं बोलता था।

और जब वह स्कूल के लिए निकलता, तो
आस-पास के बच्चे चिल्लाते,
"वह घुंघराले बालों वाला लड़का जा रहा है -
वह लड़का जो कभी झूठ नहीं बोलता।"

और हर कोई उससे बहुत प्यार करता था,
क्योंकि वह हमेशा सच बोलता था,
इसलिए हर दिन, जब वह बड़ा हुआ,
कहा जाता था, "वह ईमानदार युवा चला गया।"

और जब पास खड़े लोग
इसका कारण पूछने के लिए मुड़ते, तो
जवाब हमेशा यही होता:
"क्योंकि वह कभी झूठ नहीं बोलता।"

जसमीन कौर
तृतीय स

आशा

"आशा" पंखों वाली चीज़ है -
जो आत्मा में बसती है -
और बिना शब्दों के धुन गाती है -
और कभी नहीं रुकती - बिल्कुल भी नहीं -

और सबसे मधुर - आंधी में - सुनाई देती है -
और भयंकर तूफान होगा -
जो उस छोटे से पक्षी को शर्मिंदा कर सकता है
जिसने इतने सारे लोगों को गर्म रखा था -

मैंने इसे अत्यंत ठण्डे देश में भी सुना है -
और अत्यंत विचित्र समुद्र में भी -
फिर भी, कभी भी, चरम सीमा पर भी,
इसने मुझसे एक टुकड़ा भी नहीं मांगा।

मिष्टी
पंचम अ

एक बच्चा.

जहाँ दुनिया मेरे लिए बस घर से स्कूल
का रास्ता था !!
वहीं एक बच्चा स्कूल जाने के लिए
तरसता था !!
जहाँ मैंने माँ बाप के प्यार का सम्मान
न किया !!
वहीं एक बच्चा माँ - बाप के प्यार के
लिए तरसता था !!
जहाँ अपने खिलौने तोड़ मैं , नए
खिलौने माँगता था !!
वहीं एक बच्चा अपना घर चलाने के
लिए, मिट्टी के खिलौने बनाता था !!
जहाँ मैं शिक्षा मिलने पर भी सदा उससे
दूर भागता था !!
वहीं एक बच्चा उसे पाने के लिए
तरसता था !!
जहां मैं अपने हर काम के लिए, माँ
-बाप पर निर्भर था !!
वहीं एक बच्चे के काम पर, उसका सारा
परिवार निर्भर था !!
जहां एक बच्चा अपने परिवार को
खिलाने के लिए काम करता !!
वहीं मैं, खाने से लेकर खिलौने तक,
शिक्षा से लेकर किताबों तक,
मां बाप के प्यार में दुलार में अपनों के
लिए कुछ न करता !!
हर चीज मुझे बिन मेहनत के मिली ,
तो मैंने उसकी कद्र न की !!
परंतु वहीं उसकी मेहनत की हर चीज,
कुछ कम कीमत पर बिकी !!
एक बदनसीब बच्चा जिसे जीवन ने
कुछ न दिया !!
पर उसने अपनों के प्रति अपना सारा
फर्ज अदा किया !!

संजना शर्मा
कक्षा- 11वीं 'स'

लड़कियों का सम्मान

लड़का- लड़की एक समान ,
लड़कियों को भी दो सम्मान।

दोनों को दो बराबर की शिक्षा,
ताकि कोई लड़की आगे चलकर;
न कहे कि, न रहेगी अब कोई अपेक्षा।

न करवाएँ लड़कियों से घर का काम ,
दें उन्हें भी लड़कों जैसा आदर-सम्मान।

दो उन्हें भी एक अवसर,
बैठेंगी वह बड़े दफ्तर ,
अब न गवाएँ यह अवसर।

लड़कियों में बसती है माँ लक्ष्मी देवी।
लड़कियों को करो प्रणाम,
करो न उनको तुम बदनाम ।

क्योंकि लड़का-लड़की एक समान,
जब लड़कियों को मिलेगा मान;
बढ़ेगी अपनी शान।

अतः सभी हों इसके लिए प्रयत्नवान ;
उन्हें भी प्राप्त होने दो विद्यादान।
हम भारतीय इस हेतु हों संकल्पवान ;
बालिकाओं का हो कल्याण।

ऐसा करके मेरा भारत बनेगा महान।
जन-जन से विनती करती यह 'भगवान'।

रवप्रीत कौर
कक्षा- ग्यारहवीं 'स'

विषय - मेरा प्यारा स्कूल

मेरा प्यारा स्कूल,सपनों का डेरा,
जहां हर दिन होता नया सवेरा।
किताबें,बस्ते, दोस्त और हम,
यहीं से सीखते जीवन का हर क्रम।
सुबह की घंटी,वो मधुर आवाज़,
बुलाती हमको, छोड़ सारे काज।
क्लास में बैठें,सुनें गुरु की बातें,
जो ज्ञान की नई राहें दिखाते।
गणित के सवाल,विज्ञान के प्रयोग,
हर विषय में मिलता नया सहयोग।
खेल के मैदान में,हँसी की धूम,
मिलकर हम सब गाते हैं झूम-झूम।
कभी नाटक,कभी गीत गायन,
हर प्रतिभा को मिलता यहाँ मँचन।
हार-जीत से सीखते हैं हम आगे बढ़ना,
गिरकर फिर से उठना और संभलना।
ये दीवारें,ये कमरे,ये गलियारे,
हर कोने में छिपी हैं यादें प्यारे।
जब हम बड़े होकर जाएंगे दूर,
याद आएगा हमको ये प्यारा स्कूल।

मनसीरत
8 ब

आजादी

पंछी है कैद अगर,
तो उड़ने में कर मदद तू ।
रात है काली अगर ,
दिया जला कर रौशन कर तू ।
बीता गए कई साल रूढ़िवादी विचारों में उलझ कर,
सुलझा मन के भाव तू ।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा , सबके जीवन का कर सम्मान तू ।
तोड़ दे दीवारें सारी ,
आगे बढ़ विजयी राह पर ।
उन वीरों ने क्या पाया , अगर तू अब भी डर में खोया ।
उठ जा तू , छू ले आसमान, आज़ादी पे है सबका हक ।

नूपुर
8 ब

जीवन की धारा

नदी बहती है, चुपचाप सी,
न शोर करे, न हड़बड़ी सी।
मैं देखूं तो ये समझ में आए,
जो मेरा है, वो खुद ही आए।

पेड़ खड़े हैं, मौन मगर,
धूप, बारिश, तूफ़ान सहकर।
मैं भी सीखूं यूँ ही बढ़ना,
बिना कहे, बस जीना और खिलना।

आसमान बदले रंग कई,
कभी उजले, कभी धुंधला उठे वही।
हर मौसम कुछ सिखा जाता है,
जीवन भी बस यूंही बहता जाता है।

सूजा
9 अ

अपना देश

आओ हम सब मिलकर, एक स्वच्छ सुंदर
देश बनाएं।
स्वच्छ सुंदर बनाए धरती को, वातावरण
को शुद्ध बनायें
गंदगी को दूर भगाकर, अपने घर को
स्वच्छ बनाएं।
वायु को प्रदूषित न होने दें, आओ इसको
शुद्ध बनाएं ।
हर नया संकल्प उठाकर, कूड़ा फेंके
कूड़ेदान में,
इधर-उधर ना ढेर लगाएं

आरोही यादव
7 स

के. वि. मेरा अभिमान

के. वि. ही मेरा अभिमान, के. वि. ही मेरी पहचान,
के. वि. से ही रोज़ी मेरी, के. वि. ही मेरा स्वाभिमान,

सुबह – सुबह विद्यालय के बच्चों को हँसता पाती हूँ,
सारी चिन्ता, सारे दु:ख, मैं भूल स्वंय को जाती हूँ,
बच्चों ने ही लक्ष्य दिया है, दे दी है मुझको पहचान,
के. वि. ही मेरा अभिमान।

ई.बी.एस.बी, शाला दर्पण के संग यू.बी.आई है,
दीक्षा पोर्टल, एकम ने तो जग में धूम मचाई है,
भाषा संगम सबको जोड़े, जैसे दो तन में इक प्राण,
के. वि. ही मेरा अभिमान।

के. वि. मक्सद बच्चों को अच्छे इन्सान बनाना है,
पहचान करा के खुद की अन्तर शक्ति से जुड़वाना है,
देश विदेशों में के. वि. ने, दी है भारत को पहचान,
के. वि. ही मेरा अभिमान।

के. वि. एस. के कार्य तरीके अन्दर तक छू जाते हैं,
इन सर्विस, इनडक्शन, हमको अति समृद्ध बनाते हैं,
'हिमान्शु' ने जो पाया कैसे, कर पाए उसका व्याख्यान,
के. वि. ही मेरा अभिमान।

सुश्री हिमान्शु सहगल
स्नातकोतर वाणिज्य

मजेदार पहेलियां

वह क्या है जिसके पास एक आंख है, लेकिन वह देख नहीं सकता?
उत्तर: एक सुई.

ऐसी कौन सी चीज है जो पानी में गिरने पर भी गीली नहीं होती?
उत्तर: परछाई

ऐसी कौन सी चीज है जो हमेशा आगे बढ़ती है लेकिन कभी पीछे नहीं जाती?
उत्तर: समय

ऐसा कौन सा पेड़ है जिसमें कभी पत्ते नहीं होते?
उत्तर: नारियल का पेड़

ऐसी कौन सी चीज है जो जितनी ज्यादा होती है उतनी ही हल्की होती है?
उत्तर: हवा

हरे रंग की उसकी काया, लाल मकान में काला शैतान समाया, गर्मी में आता, सर्दी में गायब हो जाता।
उत्तर: तरबूज

वो कौन है जिसका पेट फूला हुआ है मगर वो दवाई नही खाता और दिन-रात बिस्तर पर ही लेता हुआ रहता है?
उत्तर: तकिया

एक फूल यहां खिला, एक खिला कोलकाता, अजब अजूबा हमने देखा, पत्ते के ऊपर पत्ता।
उत्तर: पत्ता गोभी

हरी डंडी लाल कमान, तोबा-तोबा करे इंसान।
उत्तर: लाल मिर्च

मैं गर्मी में आता हूं, सबके मन को भाता हूं, खट्टा मीठा सा स्वाद है मेरा, इसलिए फलों का राजा कहलाता हूं।
उत्तर: आम

अनुष्का
तृतीय ब

Section- C

संस्कृत-विभागः

सम्पादकीयम्

धनस्यावश्यकता सदुपयोगश्च

सर्वे मानवा: सुखं इच्छन्ति न तु दु:खम् । धनम् विना सुखं नास्ति । अत: जीवने धनस्य महत्युपयोगिता वर्तते । धनेन विना जीवनयात्रा कठिनं परिलक्ष्यते । सुखोपभोगार्थं , परोपकारार्थं , दानार्थं , विवाहार्थं , संतानपालनार्थं , धनस्य महती आवश्यकता वर्तते । भर्तृहरिणा सत्यं कथितं –

यस्यास्ति वित्तं स: नर: कुलीन: स: पण्डित: श्रुतवान् गुणज्ञ: ।
स: एव वक्ता स: च दर्शनीय सर्वे गुणा: काञ्चनमाश्रयन्ति ॥

पञ्चतंत्रकारस्य रचयिता विष्णुशर्मामहोद्येनापि धनविहीनस्य गृहं विषये कथितम् –

गगनमिव नष्टाटतारं , शुष्कमिवसर: , श्मशानमिव रौद्रम् ।
प्रियदर्शनमपि रुक्षं , भवति गृहं धनविहीनस्य ॥

धनस्योपयोगितामधिकृत्य महर्षिभिर्धर्मार्थकाममोक्षाणाम् इति चतुर्वर्गे धनस्य द्वितीयं स्थानं प्रदत्तम् । अत: सर्वे सदा सदुपायेन धनोपार्जनं कर्तव्यम् ।

परं धनस्य सीमा वर्तते । धनेनोपनेत्रं तु क्रेतुं शक्यते , नहि ज्ञानम् । अतएव धनस्य सदुपयोग: एव कर्त्तव्य: । उक्तमचापि - दानं भोगो नारास्तिस्रोगतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति , न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

अस्मिन् पत्रिकाया: संस्कृतानुभागे छात्रा: कानिचित् रचनानि प्रस्तूयन्ते । आशासे इमे लेखा: अन्यान् छात्रान् संस्कृतभाषाया: पठनं लेखनं च प्रेरयन्ति इति मे दृढ़विश्वास: ।

सुमन लता
संस्कृत
शिक्षिका

हास परिहास

1 शिक्षक: - कस्य खगस्य अंडानि विशालानि सन्ति ।
छात्र: - गुरुदेव ! अहम् अधिकं न जानामि ! परन्तु अहम् सर्वदा विषये शिलानि अंडानि गृहणामि ।
2 शिक्षक: - पृथिव्यां कस्मिन गृहे गमनं सरलं अस्ति ?
छात्र: - सत्यागृहे ।
3 मोहन: - मित्र ! अहं चिंतयामि यत नेता – अभिनेत्री मध्य का समानता अस्ति?
छात्र: - तौ अपि जनौ सदा असत्यं वदत्त: ।

ईशिका
अष्टमी स

हस्तकुटुम्बम्

एष: स्नेहालु: तात: (अङ्गुष्ठः)
निकटे निवसति ननु माता (तर्जनी)
ज्येष्ठा पुत्री दीर्घतमा (मध्यमा)
तस्या: भगिनी मनोरमा (अनामिका)
कनिष्ठबाला अंते च (कनिष्ठिका)
हस्तकुटुम्बं मम पश्य ॥
हस्तद्वयेन प्रणमामि
आशीर्वादम् विन्दामि ॥

कृतिका
अष्टमी स

अमूल्य वचनानि

1. चरित्र मानवस्य श्रेष्ठं धनमस्ति ।
चरित्र मनुष्य का श्रेष्ठ धन है ।

2. विद्याऽमृतमश्नुते ।
विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है ।

3 बुद्धि ज्ञानेन शुध्यति ।
बुद्धि:ज्ञानेन शुद्ध होती है ।

4 बालादपि सुभाषितम् ।
बच्चों की भी अच्छी बात मान लेनी चाहिए ।

5 परिश्रमेण सुखं लभते।
परिश्रम से सुख मिलता है ।

6 यादृशी संगति: यस्य तादृश: भवेत्त् ।
जो जैसी संगति में रहता है वैसा ही हो जाता है ।

7 उपायेन हि यच्छक्यं ।
जो काम उपाय से हो सकता है वह पराक्रम से नहीं हो सकता ।

8 विनम्र: सदा उन्नतिं करोति ।
विनम्र व्यक्ति सदा उन्नति करता है ।

समरप्रताप सिंह
अष्टमी स

अनुशासनं किं भवति

वयं विद्यालये सर्वत्र आंग्ल भाषायां श्रुणुम: यत् Discipline संस्कृत भाषायां अस्य शब्दस्य अनुवाद: भवति अनुशासनम् । अनु उपसर्ग: अस्ति । शास् इति धातु अस्ति । ल्यूट् प्रत्यय । अत्र धातो: महत्व एव प्रमुखं अस्ति यस्य अर्थ: भवति शिक्षणम् । अत: शब्दनिर्माणप्रक्रियां दृष्टवा ज्ञायते यत् गुरुभि: ये गुणा: नियमा: शिक्षण रुपेण दीयन्ते तेषां अधिग्रहणं गुणानां नियमानाम् अधिग्रहणं तदा सफलं भवति यदा विद्यार्थिन: तेषां पालनम् कुर्वन्ति । पृथिव्यां बहव: महापुरुषा: अभवन् । समाजे तेषां स्थानम अतिमहत्वपूर्णम अस्ति । तै: सुभाषितै: वचनै: जना: स्वजीवने सफला: भवन्ति । परं ये जना: तानि वचनानि परित्यज्य कार्यं कुर्वन्ति । सुभाषित वचनानां पालनं जीवने अत्यावश्यक भवति ।

श्रीमद भगवद्गीतायां श्रीकृष्ण: कथयति यत् –

यद्यदाचरति श्रेष्ठ: तदेव इतरो जन: ।
स: यत् प्रमाणं कुरुते लोक: तदनुवर्तते ॥

गुरुजना: यथा आचरणं करोति तथैव अन्य जना: अपि आचरणं कुर्वन्ति । गुरुजना: यत् कार्यं प्रमाण रुपेण कुर्वन्ति संसारे जना: तां नियमरुपेण स्वीकुर्वन्ति ।

वैज्ञानिक रुपेण अपि सिद्धयति यत् असमाकं गुणा: अनुवांशिक रुपेण स्थानांतरित: भवन्ति । अत: यदि वयं अनुशासने स्थास्याम: तदा असमाकं अनुज: अनुशासने स्थास्यन्ति । अत्र एवं विचारणीय: भवति यत् यदा कदा गुरुजना: अपि अमंगलपूर्णम् कार्यं कुर्वन्ति । एतादृकसमये अंत: करणेन विचार्य कार्यं कर्त्तवयम् ।

शाइनप्रीत कौर
सप्तमी ब

सुभाषितानि

1 सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यं
अप्रियम् ।

2 अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन: ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विदया यशो बलम् ॥

3 विद्या ददाति विनयं ।

4 धारयति इति धर्म: ।

5 संगठने शक्ति: कलोयुगे ।

6 शठे शाठ्यं समाचरेत् ।

7 अनाभ्यासे विषं शास्त्रम् ।

8 जननी जन्म भूमिश्च स्वरगादपि गरीयसि ।

तनिश धीमान
सप्तमी अ

किं भवान् जानाति ?

1 कलौवीराङ्गनाय का प्रोक्ता ?	(रानी लक्ष्मीबाई)
2 क: च राजा महान् कवि: ?	(भोज:)
3 सदा सत्य केन प्रोक्तम् ?	(हरिश्चन्द्र)
4 का त्रेतायां पतिव्रता ?	(सीता , सावित्री)
5 दातावीरश्च को महान् ?	(कर्ण:)
6 पुराणानामं क: अस्ति कर्ता ?	(वेदव्यास)
7 किं कृतं तुलसीदासेन ?	(रामचरित मानस)
8 किं कृतं कालीदासेन ?	(काव्यत्रयं, नाटकत्रयंच)

मानव सैनी
सप्तमी ब

एषु इमा: गुणा: प्रसिद्धा

1 अहिंसा	महात्मन: बुद्धस्य
2 सत्याग्रहस्य	महात्मन: गांधिन:
3 दानम्	कर्णस्य
4 वाण:	अर्जुनस्य
5 भक्ति	प्रहलादस्य
6 सज्जनता	युधिष्ठरस्य
7 पितृभक्ति:	श्रवणस्य
8 तप:	ध्रुवस्य
9 वरदानम्	शिवस्य
10 त्याग:	मुने दधीचे
11 नीचता:	दुर्योधनस्य
12 क्रोध	महर्षे दुर्वासा

सिद्धार्थ शर्मा
अष्टमी ब

SECTION-D

ENGLISH

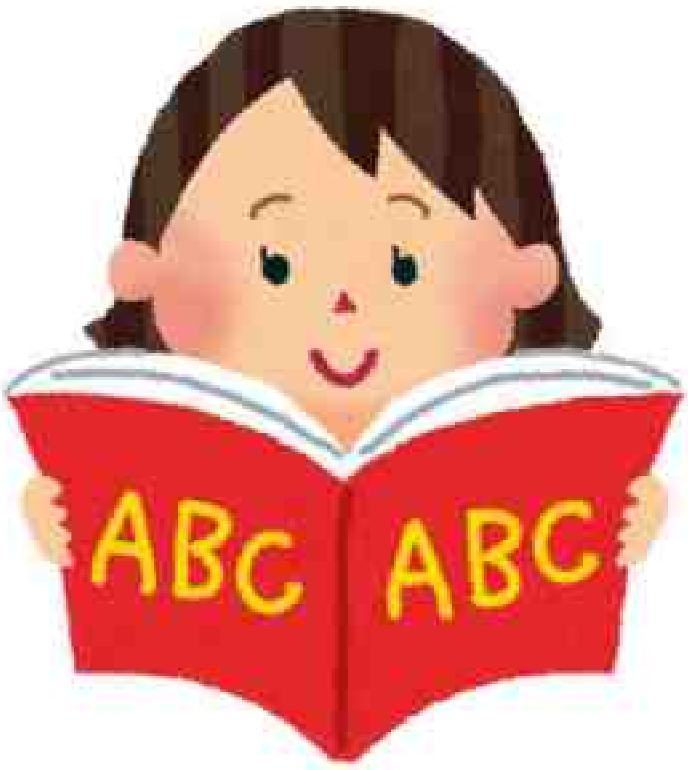

The Boy Who Cried Wolf

There once was a boy who grew bored while watching over the village sheep. He wanted to make things more exciting. So, he yelled out that he saw a wolf chasing the sheep. All the villagers came running to drive the wolf away. However, they saw no wolf. The boy was amused, but the villagers were not. They told him not to do it again. Shortly after, he repeated this antic. The villagers came running again, only to find that he was lying. Later that day, the boy really sees a wolf sneaking amongst the flock. He jumped up and called out for help. But no one came this time because they thought he was still joking around. At sunset, the villagers looked for the boy. He had not returned with their sheep. They found him crying. He told them that there really was a wolf, and the entire flock was gone. An old man came to comfort him and told him that nobody would believe a liar even when they are being honest.

Moral: Lying breaks trust.

Shobha Bhardvaj
Third B

Elephant and Friends

A lonely elephant was looking for friends in the forest. The monkey declined to be the elephant's friend because the elephant could not swing in the trees. The rabbit turned the elephant because it was too big to fit in the burrow. The frog refused to be the elephant's friend because it could not jump. Every other animal said no to the poor elephant. The next day, all the animals in the forest were running away in fear. The elephant stopped a bear who said that the tiger was attacking them all. The elephant nicely asked the tiger to stop, but the tiger told the elephant to stay out of the way. The elephant proceeded to kick the tiger and scare it away. The other animals then realised that the elephant was the perfect size to be their friend.

Jasnoor Singh
Third B

Moral: Friends can be any shape or size.

A Glass of Milk

There was a poor boy who would sell newspapers to pay for school. One day, he was ravenous and decided to ask for food at the next house he visited. Several people denied him food. However, a girl at one house offered him a glass of milk. She refused to take payment for it. After many years, this girl fell sick. No doctor wanted to help her. She decided to go to the best doctor in the town. The doctor spent months treating her, though she could not afford the service. When she received the hospital bill, it read 'Paid in full, with a glass of milk.'

Moral: Good deeds are always rewarded.

Diljot Singh
Third A

Bird in hand, worth two in the bush

Once upon a time there was a very poor man in the village. He used to eat whatever he could hunt in the forest.
He would hunt for game once in two or three days, bring back the game and cook it and eat. He wouldn't spend too much in the forest because he was scared of the leopards that roamed the forest.
One summer month, it was very hot and the forest was parched and there was nothing to eat. The poor man was slowly walking around in the forest. He came across a bird perched on a low branch. The man was very light on his feet and the bird did not notice him coming. He quickly grabbed the bird and held it.
Just as we was about to leave the forest, he saw a large deer standing near the tree. He had one arrow and he could aim for the deer with it. He let the bird in his had fly and took the las arrow from the quiver and shot at the deer. Lucky for the deer it saw the man at the last minute and ran away, just as the arrow had left the quiver. Now the man was left with nothing, not the bird or the deer.

Moral of the story:
This is a beautiful story to illustrate the fact that a bird in hand is worth two in the bush. The man should never have gotten greedy.

EkamPreet Kaur
Fourth A

The Lioness and the Mouse

This is a story about the Lioness and a Mouse.As we all know, lionesses are aggressive, haughty, and inclined to look down on smaller animals. Once while the lioness was walking around in the jungle, a thorn once pierced the paw of one of the lioness as she was circling the bush. The lioness made the proud decision to forgo seeking assistance. She wandered the jungle while bleeding and becoming weaker.

One day she came across a lowly mouse. The lioness was suffering greatly. Despite being really afraid, the mouse had the guts to give assistance. He pulled the thorn out of the lioness' paw. Finally the lioness got relief from the pain and realised that she should have sought assistance much earlier

Ekampreet Badhan
Fourth A

Moral of the story:

Everyone has a role in society, A person might be the prime minister of the country, but he still needs a doctor when he falls sick. We all have roles and each of us is important.

The Three Fish

In a pond lived three fish, they had always lived in this pond. These fish were great friends. The first fish was smart. The second one was not as smart, but knew that he was not smart and would listen to the first fish. The third fish on the contrary was a bit adamant and did not like to change.

These three fish usually would go to one corner of the pond and play there daily. One day, the first fish noticed a fisherman near the side of the pond where they usually play. Since he was very smart, he knew that he should not go to that side on this day. He told his friends the same thing. The second fish as usual agreed with the first fish.

The third fish was adamant, did not like change and wanted to prove that he was smarter than the first fish. He told the other two that he was going to go to the usual side of the pond. Inspite of the other two fish trying to stop him, he still went and got caught in the net.

Beyond the Spotlight: Invest in Sports

"Nations rise not by how they entertain, but by how they empower."

In my opinion, India has become too focused on reality shows — from singing and dancing contests to celebrity dramas. While entertainment has its place, I feel that sports often take a backseat, even though our country is full of incredible talent and potential.

Whenever I watch TV, I notice how much money and attention go into reality shows. If even a small part of that funding were directed towards sports academies, rural training centers, and athlete welfare programs, India could easily produce world-class athletes in many disciplines.

I think the government should make sports education compulsory and actively fund local tournaments. Schools that produce athletes deserve special recognition and rewards. When students are encouraged to play from an early age, they grow up healthier, more disciplined, and proud of their country.

Instead of endless celebrity-based reality shows, I wish media houses would create "Sports Reality" formats — where hidden talent is discovered, athlete stories are shared, and sports are made truly aspirational. This would not only entertain but also inspire millions.

I personally feel that India must invest in more stadiums, fitness zones, and sports villages — especially in small towns and rural areas. Scholarships, proper nutrition, and mentorship should be made available to every deserving athlete, regardless of background.

It's high time athletes got the same media attention and endorsement opportunities as film and TV stars. When young people see real-life champions celebrated, they will dream of representing India — not just of becoming famous.

I truly believe that India doesn't lack talent — it only lacks the spotlight on the right stage.

Let's celebrate our real heroes, not just on screen, but on the field

Avijot Singh
Class: 11-C

The Winter Prank and a Secret Lesson

One chilly winter evening, after playing basketball, Me and my friend were walking home. Our noses were red from the cold, but our minds were full of mischief.

"Thodi Shararat karte hai.!!" I whispered.

My friend giggled and nodded.

We went to a kind but strict uncle's house in our colony. Everyone respected him because he was sweet but also disciplined. We pressed his doorbell and stood up straight.

"Namaste Uncle! We are from Smily Foundation. Would you like to give a donation?"

Uncle smiled and went inside. When he came back, he had a ₹100 note in his hand. I quickly said, "Uncle, maximum donation is ₹20." He laughed, gave us ₹20, and we ran away happily.

A few minutes later, we used that money to buy Kurkure. As we sat eating, our laughter slowly faded. A heavy feeling filled our hearts. "We tricked Uncle... that wasn't right," my friend said softly.

That night, neither of us could sleep peacefully. The next morning, we decided to fix our mistake. We wrote a small note that said sorry, added ₹20 and ₹10 extra, and went to Uncle's house again.

We quietly placed the note and money at his doorstep, rang the bell, and hid behind the wall. Uncle opened the door, looked at the note, picked it up, and stepped outside. He looked around, but we stayed hidden like two little spies. As we walked away, our hearts felt light. We had done the right thing.

Moral of the Story:

Playing pranks can be fun, but being honest and correcting your mistakes makes you truly happy.

Ayushi Singh
Class -11th A

BARN OWL

The Barn Owl is one of the most fascinating birds of the night. It is easily recognized by its white, heart-shaped face and soft golden feathers. This owl flies silently, which helps it catch its prey—mostly rats and mice—without being noticed. Barn Owls are often found in farms, old buildings, and open fields. They play an important role in nature by controlling pests and keeping the balance in the environment.

The Barn Owl has a white, heart-shaped face and big dark eyes. Its body is covered with soft golden and white feathers. It has long wings and short legs that help it fly smoothly and catch its prey. When it flies at night, it looks almost like a ghost moving silently through the air.

Barn Owls live in open places like farms, grasslands, and fields. They often make their nests in old barns, trees, or buildings. These owls can be found in many countries around the world, except very cold places like Antarctica.

Barn Owls mostly eat small animals such as mice, rats, and insects. They hunt at night using their excellent hearing and sharp eyesight. Their flight is silent, so the prey doesn't even hear them coming. This makes them very good hunters.

Barn Owls are very helpful to farmers because they eat many rats and mice that can harm crops. One owl can eat hundreds of mice in a year! By keeping the number of pests low, they help protect the balance of nature and keep farms healthy

BY MUSA KHAN
CLASS X1 'A'

Daily effort

There were two athletes, who were very good friends. They used to do track running for their school. When they were about 14 they were set to participate in a district level game.

Both the boys were very good athletes and used to practise with each other in the same ground. One day, while getting back from their daily athletics practice, they had an accident. Both of them sustained major injuries.

Luckily, they were rushed into the hospital and came out of it alive. But they had many injuries and could barely walk.

The first kid was very frustrated and gave up sport. He became petulant and started blaming everything and everybody. He continued to be angry all his life and he needed a walking support cane to get around.

The second kid too sustained major injuries and could not walk without support initially. Luckily his aunt was a physiotherapist. She gave him simple exercises to do. They were simple and had no effect initially, but the boy decided to trust the process. He did physical therapy exercises daily without fail. Slowly his strength improved. After 2 years, he could walk without the cane.. Slowly he started working on his lower body strength and was able to jog. By the time he was 17 and final year in school, he started running for his district. In the next few years he continued to compete and he even competed at the national level. In fact the extra exercises he had done to get out of his injuries helped him to grow fitter than most of his peers.

Both the boys were presented with a setback in life, one of them gave up. The other didn't. He decided to work harder and get out of the setback and was able to achieve many things in life

Moral of the story:

This is a growth mindset story. In a growth mindset failures are not seen as the end but as stepping stones to doing great things. The second boy in this story did great things because he decided to put extra effort to get around his set back.

The Earth is Crying

THE EARTH IS CRYING, OH SO SAD POLLUTION'S RISING, MAKE US MAD THE ICE IS MELTING, THE SEAS ARE HIGH WE MUST ACT NOW, BEFORE WE SAY GOODBYE.

THE FUTURE'S UNCERTAIN, THE PRESENT'S BRIGHT, LET'S REDUCE, REUSE AND RECYCLE WITH ALL OUR MIGHT.

PLANT SOME TREES, AND REDUCE OUR WASTE FOR A CLEANER PLANET, LET'S MAKE A HASTE.

LET'S JOIN OUR HANDS, AND WORK AS ONE, TO SAVE THE EARTH, BEFORE THE DAY IS DONE. WE CAN MAKE A DIFFERENCE, IT'S TRUE, LET'S ACT NOW, FOR ME AND FOR YOU.

Prabhjot
Gurleen

School Life

Today we are telling about "THE STUDENT'S SCHOOL LIFE ". School life is one of the memorable and learning period in student's life. It is a time that tells us about many things like: learning, friendship, discipline and personal growth. Every Moment or activities of student's school life shapes a student's Personality and future. School is a place where a student finds the right field and learns about teamwork. School is the base of our future life. One of the best parts of school life is making new friends. We never forgot things that we do in free time and in breaks like: sharing lunch boxes, playing during breaks and helping each other in studies and assignments etc . The friends we made in school always helps us in many problems and beneficial in future. In school we learn about discipline and time management. In school 's time students learn many activities which gave them confidence to do anything in life. Activities like sports, art, debate, drama, chess and music allow students to explore talent and passions. In school students also learn leadership. Students commonly face challenges and stress for papers and to complete the homework . School time period is very important for student. These years shape not just student knowledge, but their personality and future path.

Written by:
ABHINAV SINGH
&RAJVEER RAM

🌅 "A New Tomorrow" 🌅

THE SUN WILL RISE, THE SKY WILL GLOW,
A BRIGHTER PATH THE WORLD WILL SHOW.
THE DREAMS WE DREAM, THE STEPS WE TAKE,
CAN SHAPE THE WORLD THAT WE WILL MAKE.
THE BOOKS WE READ, THE THOUGHTS WE SHARE,
THE WAY WE SPEAK, THE WAY WE CARE —
ALL BUILD THE FUTURE, DAY BY DAY,
IN LITTLE ACTS ALONG THE WAY.

A SINGLE SMILE, A HELPING HAND,
CAN SPREAD SOME JOY ACROSS THE LAND.
A SIMPLE WORD, A GENTLE DEED,
CAN PLANT A VERY SPECIAL SEED.

SO DO YOUR BEST AND LEARN EACH DAY,
BE KIND TO ALL ALONG THE WAY.
THE WORLD WILL CHANGE, AND YOU WILL GROW,
AND LIGHT THE PATH FOR ALL TO KNOW.

BY- NAMAN VASHISHTH
CLASS- 10 – C

"I am the voice "

I am the voice that dares to rise,
Through cloudy thoughts and strong skies.
I am the spark in darkest night,
A burst of hope, a beam of light.

Not born of gold, not born to fame,
But dreams within me roar like flame.
Each line I write, each step I take,
I build my world, I do not fake.

They said " Too young " , they said "too small ",
But I was born to climb, not crawl.
With heart so loud and will so wide,
I carry oceans deep inside.

A poet, dreamer, fighter too,
My pen creates what stars can't do.
My ink and rhyme, truth I find -
A thousand worlds within in my mind.

NAME. - BLESSY
CLASS. - 7 B
ROLL NO. - 10

A CHAPTER THATS NEVER ENDS

Tenth grade was such a fun time,
Full of jokes, laughter, and friends so fine.
Teachers scolded, but they did care,
Their lessons stay with us everywhere.
Last day came with smiles and tears,
Photos and memories we'll keep for years.
Now I'm in eleventh, life feels new,
But I still miss tenth — and my old crew.

Shivam
XI B

A CIRCLE OF LOVING FAMILY

In the heart of a home , where memories grow ,
A family is love is the seed we sow.
Through laughter and trying, through joy and pain,
We bloom together , like sun after rain .
Each one a branch , reaching wide ,
Yet rooted together , side by side
Family means sharing simple things,
A meal of hugs the song one sings .
Family is love that never ends
A circle of hearts , made of friends .

Jaspreet Kaur
XI B

Garbage — A Growing Heap

Garbage here, garbage there,
Lying around — it's everywhere!
Plastic, paper, bottles too,
Spoiling the earth for me and you.
The air gets foul, the rivers choke,
The fish all die beneath the smoke.
Mountains of waste, so high they rise,
Cover the land, and darken skies.
But if we clean and do our part,
Recycling can make a start.
Reuse, reduce — don't throw away,
Keep our planet bright each day.
So next time you throw a thing,
Think what harm your act may bring.
Let's make Earth neat, fresh, and green,
A shining world — tidy and clean!

HARJOT SINGH
XI A

Keep Going On

Dreams are stars that shine so bright,
Guiding us through darkest nights.
Though roads are long and full of fight,
Hold your dreams with all your might.

Every step, though small , is true ,
The world is waiting just for you.

Don't be scared to try and climb,
Your dreams will come , just take your time.

Believe in you, stand strong ,
Your heart will guide you all along .

So lift your head, face every fight,
Darkness always meets the light.

Keep going on, don't stop or fear,
Tomorrow sun will soon appear.

With hope and heart, you 'll find your way,
A better life from day to day.

So reach for stars up in the sky ,
Believe in you , and you will fly.

MANPREET KAUR
class : XI B

"The Little Star in Class"

Every desk has a little light,

Hidden talents shining bright.

Mistakes may fall like tiny rain,

But each one learns,

and grows again.

Together we rise,

together we try,

Like little stars

in the classroom sky.

Tanmay Chari
11th B

Riddles (Tell- What Am I ?)

1) I"m longest in morning and evenings' play, stretching with sun in a city sway. What am I?"

2)"I have head and tail but no body. What am I?"

3) The more you take, the more you leave behind. What am I?"

4)"I am light as feather, yet the strongest man cannot hold me much more than a minute. What am I?"

5)I'm beginning of eternity, the end of time and space. What am I?"

6)"I have steps but can't walk. What am I?"

Ans. 1) Shadow 2) Coin 3) Footsteps 4) Breath 5) The letter 'e' 6) Ladder

Prabhjit Kaur
XI B

TONGUE TWISTERS

1.Six sleek swans swam swiftly southwards, silently slicing through the shimmering sea.

2.The great greek grape growers grow great Greek grapes.

3.Six slippery snails slid silently seaward.

4.Crisp crusts crackle and cruinch under crunchy crust crumbs.

5.Blue blizzards baffle bold black birds.

6.Fluffy flames flickered fiercely frightening the fog.

Prabhleen Kaur.
Class : XI B

SECTION - E
Art WORK

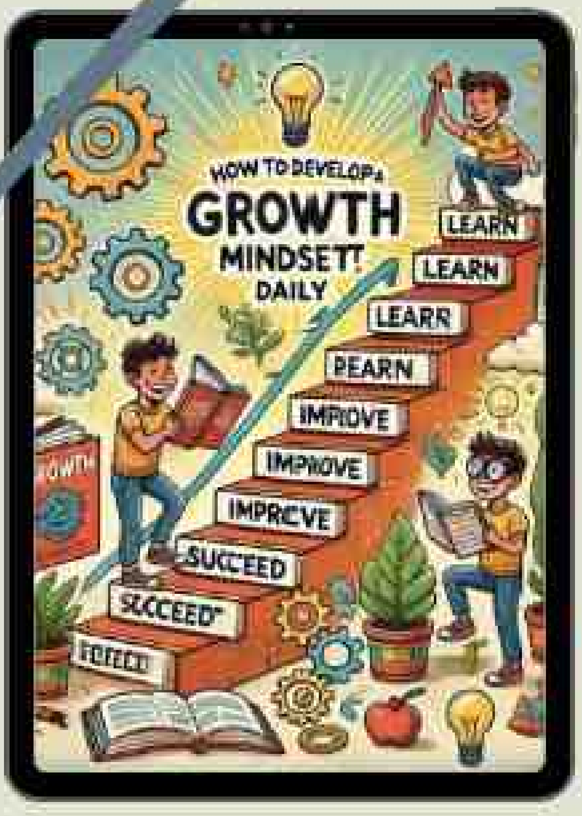

Where creativity meets passion.

An artistic journey from mind to canvas.

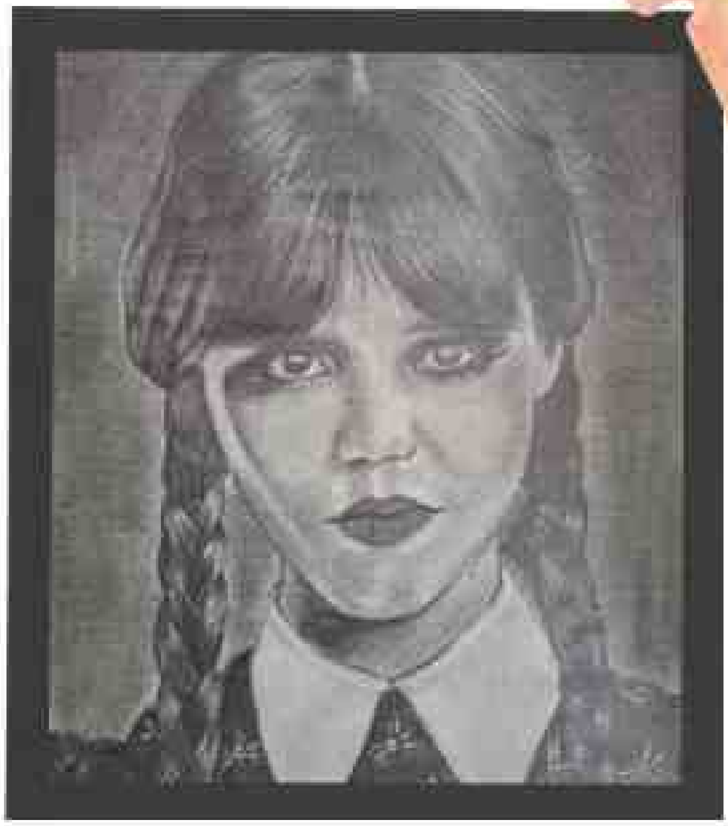

A glimpse of the world through young eyes.

SAVE WATER
PLANT A TREE
STOP POLLUTION
SAVE ENERGY
SAVE THE EARTH
REDUCE, REUSE, RECYCLE
SAY NO TO PLASTICS

Creation by Little Hands

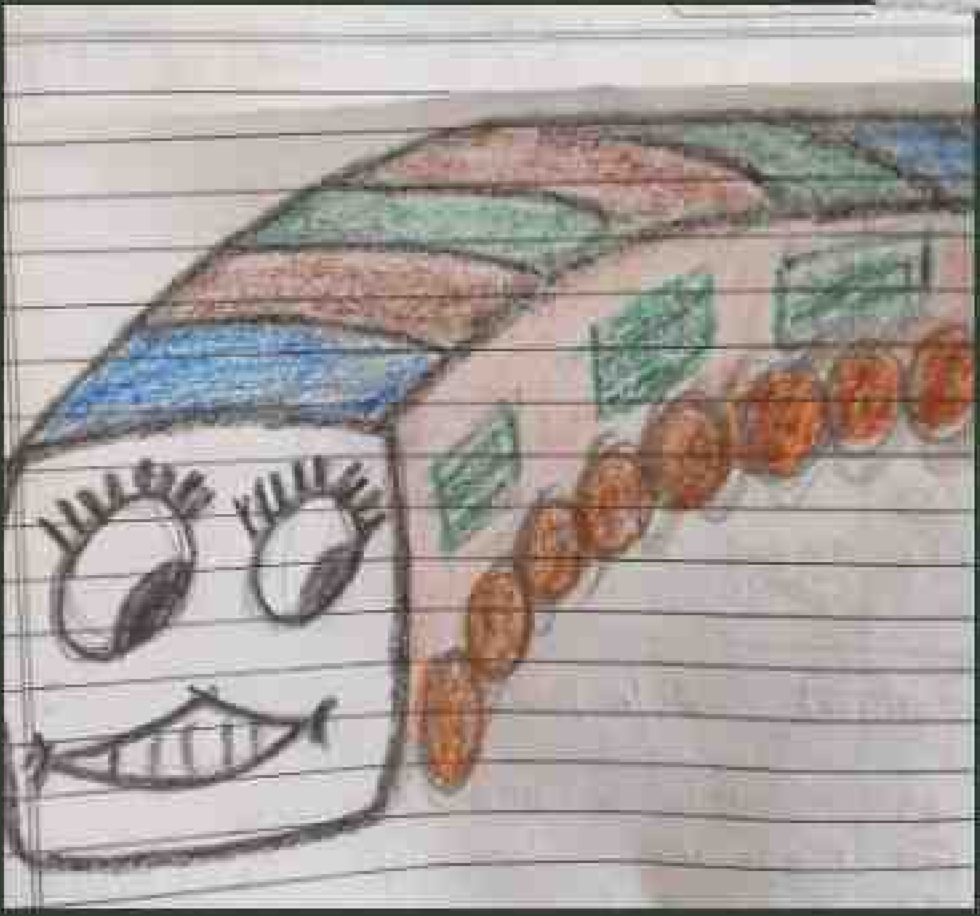

ACTIVITIES

PAPER CRAFT

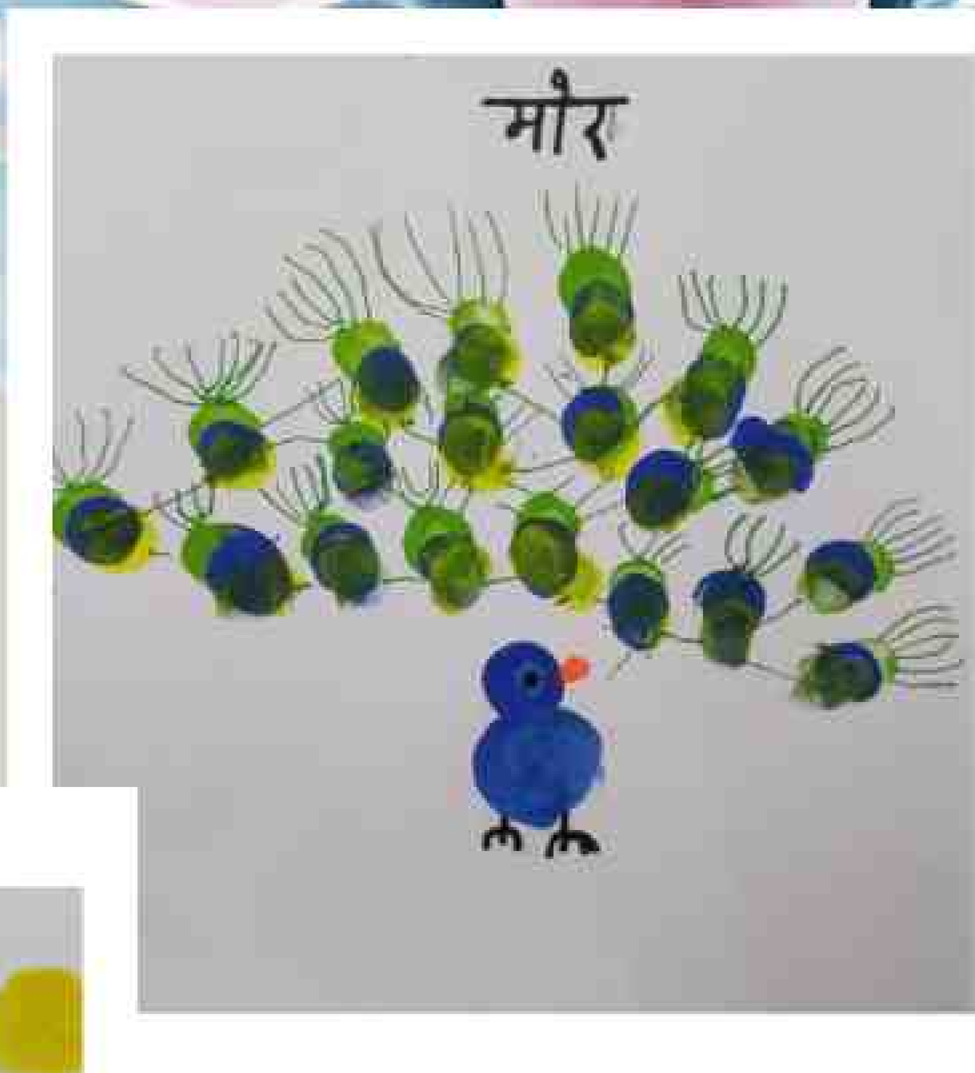

Tumb Prints Activties

A creative expression of imagination and talent.

Colors that speak louder than words.

BREAKING NEWS

पंजाब केसरी SAT,16 NOVEMBER 2024
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO. 1

पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में बाल दिवस पर समारोह आयोजित

पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में आयोजित बाल दिवस का समारोह पूर्वक का दृश्य। (चोपड़ा)

कपूरथला, 15 नवम्बर (मल्ली): पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में वीरवार को बाल दिवस के रूप में आयोजित किया।

इस खास मौके पर विद्यालय परिसर में शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा मन को लुभाने वाली साज-सज्जा की गई। कार्यक्रम की शुरुआत भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के छायाचित्र पर प्राचार्या रोजी शर्मा द्वारा माल्यार्पण के साथ की गई। प्राथमिक विभाग की सी.सी.ए. प्रभारी सुमन शर्मा द्वारा बाल दिवस महत्त्व व परंपरा के बारे में बताया गया। बाल दिवस के अवसर पर बच्चों को आनंददायक एवं हर्षित करने वाला 'कठपुतली नृत्य' आयोजित कराया।

इस अवसर विशेष पर सामुदायिक भोज का आयोजन कराया गया, जिसमें सभी कक्षाओं ने विद्यालय के प्रांगण में वृत्ताकार बैठकर एक साथ भोजन का लुत्फ उठाया। अलग-अलग राज्यों के प्रसिद्ध स्वादिष्ट व्यंजन दिखाई दिए जो भारत की अनेकता में एकता को प्रदर्शित रहे थे। इस अवसर पर प्रतिभा खोज शो के तहत नृत्य- गायन- वादन एवं अन्य कलाओं की मंचीय माध्यम से प्रस्तुति दी गई। बालदिवस को ज्ञानवर्धक मजेदार दिन के रूप में मनाया गया और अंत में बच्चों को मिष्ठान वितरण किया गया।

बच्चों के लिए यह पूरा दिन उत्साह भरा रहा। कार्यक्रम की समाप्ति वरिष्ठ प्राथमिक शिक्षिका सविता साधु द्वारा 'बच्चे मन के सच्चे' गीत के साथ की गई।

पंजाब केसरी SUN,24 NOVEMBER 2024
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO. 2

पी.एम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हुसैनपुर में 'सांप्रदायिक सद्भावना' सप्ताह संबंधी कार्यक्रम आयोजित

कपूरथला, (मल्ली): पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में सांप्रदायिक सद्भावना सप्ताह (19 से 25 नवम्बर 2024) के उपलक्ष्य में शनिवार को विद्यालय में सद्भाव परक समूह गीत एवं भाषण प्रतियोगिता आयोजित। इस खास मौके पर विद्यालय के सामाजिक विज्ञान शिक्षक भूपेंद्र जागलान द्वारा एक वक्तव्य भी प्रस्तुत किया गया। छात्र-छात्राओं व शिक्षकों द्वारा हिंसा के शिकार, वंचित एवं असहाय हुए बच्चों की सहायतार्थ राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भाव प्रतिष्ठान की अपील पर धनराशि दान के रूप में भेंट गई।

समापन के अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्ष एवं विद्यालय की उप प्राचार्या राजकुमारी द्वारा शांति और सद्भावना का संदेश भी दिया। उनके द्वारा विद्यार्थियों को सहिष्णुता, सौहार्द तथा भ्रातृतापूर्ण जीवन जीने की सीख भी दी गई।

पंजाब केसरी WED,27 NOVEMBER 2024
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO. 1

पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1 हुसैनपुर में संविधान दिवस का सफल आयोजन

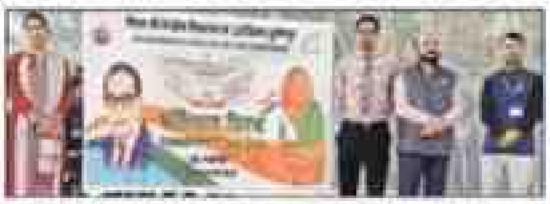

संविधान सप्ताह संबंधी गतिविधि के तहत भाषण पेश करते हुए अध्यापक। (चोपड़ा)

कपूरथला, 26 नवम्बर (मल्ली): पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में संविधान सप्ताह संबंधी गतिविधियों का आयोजन मंगलवार को संविधान दिवस के साथ संपन्न हुआ।

विद्यालय में संविधान दिवस समारोह आयोजन को उत्सव के रूप में मनाया। सप्ताह भर चली गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं में पोस्टर मेकिंग, भाषण, प्रश्नोत्तरी, समूह चर्चा इत्यादि प्रमुख रहीं। संविधान दिवस के विशिष्ट अवसर पर विविध गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को विद्यालय प्राचार्या द्वारा सम्मानित किया।

शिक्षकों द्वारा संविधान में प्रदत्त नागरिकों के कर्तव्य एवं अधिकारों के प्रति जनचेतना विकसित करने हेतु तथा संवैधानिक नीति-निर्देशों को भारतीय नागरिक के नाते जानने के लिए वक्तव्य सप्ताह भर प्रार्थना सभाओं में प्रस्तुत किए गए। विद्यार्थियों द्वारा 'सत्यमेव जयते' शीर्षक पर निर्मित पोस्टर बेहद आकर्षण का विषय रहे।

संविधान दिवस के विशेष अवसर पर शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर के छायाचित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर सम्मान प्रकट किया। छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों द्वारा संविधान विषयक शपथ ग्रहण की गई। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय प्राचार्या रोजी शर्मा द्वारा शुभकामना संदेश भी प्रेषित किया गया।

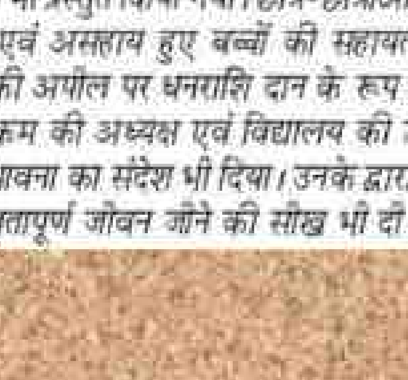

पंजाब केसरी
SUN, 15 DECEMBER 2024
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO. 4

पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 हुसैनपुर में केन्द्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस समारोह आयोजित

कपूरथला, 14 दिसम्बर (मल्ही): केन्द्रीय विद्यालय संगठन के 62वें स्थापना दिवस को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया।

इस विशिष्ट कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में विद्यालय प्रबंधन समिति के नामित अध्यक्ष सुनीता मेहता, पूर्व शिक्षक, अभिभावक तथा सरकारी एवं अन्य अग्रणी संस्थाओं में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पूर्व छात्र-छात्राओं में डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, खिलाड़ी इत्यादि प्रमुख रूप से सम्मिलित रहे।

विद्यालय प्राचार्य द्वारा सभी अतिथियों को हरित उपहार व सम्मान चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 हुसैनपुर में आयोजित केन्द्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस समारोह का दृश्य। (छाया)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से आगत बहिन बी. के. नेहा की मोटिवेशनल स्पीच सभा में उपस्थित सभी जनों में ऊर्जा व प्रेरणा भरने वाली रही। शिक्षकों और छात्र-छात्राओं द्वारा विविध शैक्षणिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते हुए कविता, भाषण, विचारों, स्वागत गीत, केंद्रीय विद्यालय गीत, भांगड़ा एवं अन्य रोचक कार्यक्रमों के माध्यम से समारोह को सफलता के शिखर पर पहुंचा दिया।

उल्लेखनीय है कि 15 दिसम्बर को केन्द्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस आयोजित किया जाता है लेकिन 15 दिसम्बर को रविवार होने के कारण 14 दिसम्बर को आयोजन संपन्न कराया गया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित विद्यालय प्रबंधन समिति के नामित अध्यक्ष द्वारा सभा को संबोधित करते हुए सभी को स्थापना दिवस की शुभ कामनाएं दी गईं तथा गतिविधियों की प्रशंसा एवं उनका [illegible] करते हुए सुव्यवस्थित व सुनियोजित कार्यक्रम के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों की सराहना भी की गई।

समारोह के समापन अवसर पर विद्यालय प्राचार्या रोजी शर्मा द्वारा स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सभी जनों को सफलतम कार्यक्रम के लिए बधाइयां दी गईं।

पंजाब केसरी
FRI,24 JANUARY 2025
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO. 4

पराक्रम दिवस पर 'परीक्षा पे चर्चा-2025' के तहत प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

कपूरथला, 23 जनवरी (मल्ही): पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जी के जन्म दिवस को समारोह पूर्वक मनाते हुए छात्र छात्राओं द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

वहीं दूसरी ओर इस पावन मौके पर शिक्षा मंत्रालय की योजना अनुसार केंद्रीय विद्यालय संगठन के निर्देश में माननीय प्रधानमंत्री जी के बोर्ड परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए आयोजित होने वाले महत्वाकांक्षी कार्यक्रम 'परीक्षा पे चर्चा' के पूर्व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी कराया गया।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विषय के रूप में 'भारत के रत्न' [illegible]

पराक्रम दिवस पर 'परीक्षा पे चर्चा-2025' के तहत आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थी अध्यापकों के साथ। (छाया)

[illegible] 100 प्रतिभागी विद्यार्थियों द्वारा प्रतियोगिता में हिस्सा लिया गया।

[illegible]

पंजाब केसरी
MON,25 AUGUST 2025
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO. 2

3 दिवसीय स्काऊट-गाइड तृतीय सोपान परीक्षण शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया

कपूरथला, 24 अगस्त (मल्ही): पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में 3 दिवसीय तृतीय सोपान परीक्षण शिविर (भारत स्काउट एंड गाइड) का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केंद्र स्थल प्राचार्या रोजी शर्मा ने तृतीय सोपान परीक्षण शिविर समारोह का उद्घाटन किया।

3 दिवसीय तृतीय परीक्षण शिविर का दृश्य। (छाया)

इस शिविर में केन्द्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ संभाग के स्काउट-गाइड के जिला- प्रथम से 29 विद्यालयों से 101 स्काउट और 63 गाइड ने भाग लिया। यह शिविर चंडीगढ़ संभाग के देवदत्त शर्मा (एल.ओ.सी.) स्काउट और जोगिंदर कौर (एल.ओ.सी.) गाइड की देख-रेख में आयोजित किया गया है।

विद्यार्थियों ने अनेक गतिविधियों में भाग लिया जैसे कि चित्रकला, रस्सी से गांठ बनाना, पृथ्वी और पर्यावरण को बचाना, वृक्षारोपण, स्वच्छता दिशा ज्ञान और अनुमान लगाना आदि। 22 अगस्त को कैम्प फायर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दर्शनीय रही।

मुख्यअतिथि के रूप में रेल डिब्बा कारखाना में संचालित स्काउट-गाइड इकाई के अधिकारी कौशल राज सोलंकी और नवदीप कुमार ने शिरकत की व विद्यार्थियों को सामाजिक कार्य सीखने और देश की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया। विद्यार्थी जीवन में भारत स्काउट और गाइड के महत्व को भी अपने वक्तव्य में स्पष्ट किया।

23 अगस्त को प्रातः सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया तथा शेष जांच पूर्ण कर ली गई। इसके उपरांत अधिकारियों द्वारा स्काउट-गाइड ध्वज को उतार कर प्राचार्या एवं डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर गाइड रोजी शर्मा को सौंप दिया गया। मध्याह्न भोजन के बाद एक सफल शिविर का समापन हो गया।

UPDATE

पंजाब केसरी
SUN,01 DECEMBER 2024
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO. 4

पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में 'वरिष्ठ अभिभावक दिवस' का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित

पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में आयोजित 'वरिष्ठ अभिभावक दिवस' रंगारंग कार्यक्रम का दृश्य। (छाया)

कपूरथला, 30 नवम्बर (मल्ली): पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में शनिवार को वरिष्ठ अभिभावक दिवस समारोह मनाया गया।

इस खास मौके पर विद्यालय परिसर में शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा मन को लुभाने वाली साज-सज्जा की गई। बच्चों ने दादा-दादी, नाना-नानी का तिलक लगाकर स्वागत किया।

कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्या रोजी शर्मा तथा वरिष्ठ अभिभावकों द्वारा मां शारदा की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ की गई। मंच संचालक के रूप में प्राथमिक विभाग की पाठ्य सहगामी गतिविधि प्रभारी सुमन शर्मा ने ज्येष्ठ अभिभावकों का हमारे जीवन में योगदान विषय पर अपनी कुछ प्रभावशाली पंक्तियों के माध्यम से महत्त्व व्यक्त किया।

इस दौरान बच्चों ने मन को लुभाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए है। वरिष्ठ अभिभावकों तथा बच्चों के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई। साथ ही वरिष्ठ अभिभावकों ने कई रोचक मुकाबलों में भाग लिया विजेताओं को विद्यालय प्राचार्या पारितोषिक दिए गए। कार्यक्रम के मध्य में वरिष्ठ महिला अभिभावक द्वारा 'शब्द' गायन किया गया।

कार्यक्रम समापन पर संस्थाप्रधान के रूप में विद्यालय प्राचार्या द्वारा सभासदों को संबोधित कहा गया कि, 'पश्चिमी सभ्यता नई पीढ़ी पर हावी होती जा रही है इसलिए बच्चों में वरिष्ठ जनों के प्रति आदर सम्मान कम होता जा रहा है।

संयुक्त परिवार में रहने वाले बच्चों का ज्यादा विकास हो रहा है। बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए उम्र बुजुर्ग अभिभावकों से अपील की गई।'

बच्चों के लिए यह दिवस उत्साह भरा रहा। अंत में प्राचार्या द्वारा व्यवस्थित, सुनियोजित एवं सफल कार्यक्रम के लिए सभी के योगदान की सराहना की गई।

पंजाब केसरी
THU,12 DECEMBER 2024
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO.

पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में भारतीय भाषा उत्सव -2024 का आयोजन

पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में आयोजित भारतीय भाषा उत्सव-2024 समारोह का दृश्य। (छाया)

कपूरथला, 11 दिसम्बर (मल्ली): पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में 4 से 11 दिसम्बर के मध्य संचालित भारतीय भाषा उत्सव - 2024 की इस वर्ष निर्धारित थीम 'भाषाओं के माध्यम से एकता' पर सप्ताह भर चली गतिविधियों का 11 दिसम्बर को समापन हो गया।

सप्ताह के अंतर्गत दिवसवार निर्धारित गतिविधियों का संचालन कराया जाना दर्शनीय रहा। विद्यार्थियों ने प्राकृतिक परिवेश में उद्यान में भ्रमण करते हुए प्रकृति की सुंदरता को अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति दी, प्रकृति पेड़-पौधों आधारित कविताओं का गायन किया गया।

विभिन्न भाषा-भाषी विद्यार्थियों ने अपनी मातृभाषा में नारा लेखन गतिविधि में भाग लिया। चित्रकारी से अलग अंदाज में भाषाओं का महत्त्व व्यक्त किया गया। छात्र-छात्राओं द्वारा स्वकीय मातृ-भाषाओं में प्रचलित लोकगीतों पर नृत्य प्रस्तुत किया गया।

संवाद एवं अभिनयात्मक प्रस्तुति भी विशेष आकर्षण का विषय रहा। सप्ताह के अंतिम दिन संस्कृति विनिमय दिवस के रूप में मनाते हुए विद्यार्थियों द्वारा अपनी-अपनी संस्कृति को परिलक्षित करने वाली पोशाक धारण कर मंचीय प्रस्तुतियां दी गईं।

समापन समारोह के अवसर पर बोलते हुए विद्यालय प्राचार्या रोज़ी शर्मा द्वारा कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए विद्यार्थियों व शिक्षकों को शुभकामनाएं प्रेषित की गईं।

पंजाब केसरी TUE,09 SEPTEMBER 2025
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO. 1

के.वी.एस. की 54वीं राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता में पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 के प्रतिभागियों का रहा शानदार प्रदर्शन

54वीं राष्ट्रीय हॉकी (लड़के) प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी विजेता ट्रॉफी के साथ। (छाया)

कपूरथला, 8 सितम्बर (मल्ली): उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में 29 अगस्त से 2 सितम्बर 2025 तक आयोजित पंच दिवसीय हॉकी अंडर-14 और अंडर-17 (लड़के) की प्रतियोगिताओं में चंडीगढ़ संभाग की ओर से पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर के खिलाड़ियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा।

अंडर-14 के मैचों का आयोजन स्थल मोहम्मद शाहिद हॉकी स्टेडियम विजयंत खंड लखनऊ रहा। यहां देशभर से आईं 8 टीमों में से चंडीगढ़ संभाग की टीम द्वारा फाइनल मुकाबला रांची संभाग के साथ खेला गया तथा रजत पदक जीतते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यह पूरी टीम पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रे.डि.का.) हुसैनपुर की थी जिसने चंडीगढ़ संभाग का प्रतिनिधित्व किया। टीम के कोच वेंकट रमन, टी.जी.टी. (पी. एंड एच.ई.) एवं टीम मैनेजर के रूप में सचिन यादव का विशेष योगदान रहा।

दूसरी ओर गुरु गोबिंद सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज लखनऊ के परिसर में स्थित मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम में अंडर-17 की प्रतियोगिताओं के लिए अलग-अलग संभागों की 12 टीमों के मुकाबले में चंडीगढ़ संभाग की टीम ने यहां भी वाराणसी संभाग के साथ फाइनल मुकाबला खेलते हुए रजत पदक जीतते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

चंडीगढ़ संभाग की अंडर-17 टीम में खिलाड़ियों की दृष्टि से सर्वाधिक 9 खिलाड़ियों द्वारा प्रतिनिधित्व पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रे.डि.का.) हुसैनपुर का रहा। के.वी.एस. चंडीगढ़ संभाग के टी.जी.टी. (पी. एंड एच.ई.) शिक्षक राम कुमार एवं प्रवेश कुमार का क्रमशः टीम कोच व मैनेजर के रूप में विशेष योगदान सराहनीय रहा।

गौरतलब है कि इससे पूर्व 30 जुलाई से 03 सितम्बर तक लखनऊ में ही अंडर-17 बालिका वर्ग में भी चंडीगढ़ संभाग ने तीसरे स्थान के लिए खेले गए हॉकी मैच में गुरुग्राम संभाग को 5-0 से हराकर कांस्य पदक अपने नाम किया। इस टीम में भी सर्वाधिक 16 खिलाड़ी पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रे.डि.का.) हुसैनपुर से ही थे।

पंजाब केसरी FRI,25 APRIL 2025
EDITION: KAPURTHALA KESARI, PAGE NO. 4

54वीं खेलकूद प्रतियोगिता हॉकी (बालक) में पी.एम. श्री के.वि.1 हुसैनपुर ने जीता प्रथम स्थान

54वीं खेलकूद प्रतियोगिता हॉकी (बालक) में प्रथम रही पी.एम. श्री के.वि.-1 हुसैनपुर की हाकी टीम के खिलाड़ी हाकी रैफरियों, कोचों और प्रबंधकों के साथ। (छाया)

कपूरथला, 24 अप्रैल (मल्ली): पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर में के.वि. संगठन चंडीगढ़ संभाग की 54वीं खेलकूद प्रतियोगिता 23 से 24 अप्रैल के मध्य संचालित हुई हॉकी (बालक) अंडर-14 एवं 17 का वीरवार को समापन हुआ।

अंडर-17 प्रतियोगिताओं की लीग मैचों की श्रृंखला में पॉइंट्स के आधार पर पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रे.डि.का.) हुसैनपुर की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम कर सफलता का परचम लहराया, वहीं केन्द्रीय विद्यालय-4 जालंधर रजत पदक व केन्द्रीय विद्यालय उभावल, संगरूर कांस्य पदक खिताब हासिल कर द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।

पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर की अंडर-14 टीम रेफरियों द्वारा ट्रायल के उपरांत नैशनल के लिए सलैक्ट कर दी गई। 2 दिन चली इस प्रतियोगिता में 74 खिलाड़ियों ने प्रतिभागिता की।

समापन समारोह के अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में मौजूद नवजोत कौर, ओलिम्पियन अर्जुन अवॉर्डी (हॉकी) एवं सहायक खेलकूद अधिकारी, रेल डिब्बा कारखाना विशेष रूप से आमंत्रित रहीं।

विद्यालय प्राचार्या एवं मुख्यातिथि द्वारा प्रतिभागियों को मैडल व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस टूर्नामैंट को निष्पक्ष व निर्विवाद संपन्न कराने हेतु राम कुमार, टी.जी.टी., पी.एच.ई. और वेंकट रमन टी.जी.टी. पी.एच.ई. संभागीय कार्यालय चंडीगढ़ से टैक्निकल ऑफिसर नियुक्त रहे।

विद्यालय के खेलकूद प्रशिक्षक अक्षय कुमार के अथक प्रयासों से यह प्रतियोगिता सकुशल सम्पन्न हुई।

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, रेडिका, हुसैनपुर

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	पदनाम	क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	पदनाम
1.	श्रीमती रोज़ी शर्मा	प्राचार्या	26.	श्रीमती दीपिका ठाकुर	प्र.स्ना.शि.जीवविज्ञान
2.	श्रीमती राजकुमारी	उप प्राचार्या	27.	श्रीमती सिमरनजीत कौर	प्र.स्ना.शि.अंग्रेजी
3.	श्री ए.के.खलवाड़ा	स्ना.शि.जीवविज्ञान	28.	श्री भूपेन्द्र जागलान	प्र.स्ना.शि.सा.विज्ञान
4.	श्री कश्मीर सिंह कौशल	स्ना.शि.भौतिकी	29.	श्रीमती पिंकी	प्र.स्ना.शि.कार्यानुभव
6.	श्री भारत भूषण	स्ना.शि.गणित	30.	सुश्री रुचि रानी	मुख्याध्यापिका
7.	श्री राजिंदर कुमार	स्ना.शि.रसायन शास्त्र	31.	श्रीमती गुरमीत कौर	प्राथमिक शिक्षक
8.	सुश्री हिमांशु सहगल	स्ना.शि.वाणिज्य	32.	श्रीमती बिमला देवी	प्राथमिक शिक्षक
9.	श्रीमती शैरी जसवाल	स्ना.शि.रसायन शास्त्र	33.	श्रीमती रीना वर्मा	प्राथमिक शिक्षक
10.	श्री प्रिंस शर्मा	स्ना.शि.भौतिकी	34.	श्रीमती सुमन	प्राथमिक शिक्षक
11.	श्री राजेश कुमार शर्मा	स्ना.शि.हिन्दी	35.	श्रीमती नवनीत कौर	प्राथमिक शिक्षक
12.	श्री नरेंद्र कुमार शर्मा	स्ना.शि.अंग्रेजी	36.	श्रीमती सुदेश	प्राथमिक शिक्षक
13.	श्रीमती वीना	स्ना.शि.अर्थशास्त्र	37.	श्रीमती निशा सैनी	प्राथमिक शिक्षक
14.	श्रीमती रजनी भाटिया	प्र.स्ना.शि.गणित	38.	श्री टेक चंद मान	प्राथमिक शिक्षक
15.	श्री सोहनलाल	प्र.स्ना.शि.गणित	39.	सुश्री अनिशा	प्राथमिक शिक्षक
16.	श्री नायब सिंह	प्र.स्ना.शि.सा.विज्ञान	40.	श्रीमती हरमीत कौर	प्राथमिक शिक्षक
17.	श्रीमती गीतांजलि	प्र.स्ना.शि.कला	41.	सुश्री निशा	प्राथमिक शिक्षक
18.	श्रीमती गीता रानी	प्र.स्ना.शि.हिन्दी	42.	श्री नवीन कुमार	प्राथमिक शिक्षक
19.	श्रीमती सुमन	प्र.स्ना.शि.हिन्दी	43.	सुश्री नाज़रा	प्राथमिक शिक्षक
20.	श्रीमती परमिंदर कौर	प्र.स्ना.शि.अंग्रेजी	44.	श्री सचिन यादव	प्राथमिक शिक्षक
21.	श्री प्रवीण कुमार	प्र.स्ना.शि.गणित	45.	सुश्री भावना स्वामी	प्राथमिक शिक्षक
22.	श्रीमती आंचल कुमारी	प्र.स्ना.शि.पुस्तकालय	46.	सुश्री मानसी वर्मा	प्राथमिक शिक्षक
23.	श्री दीपक चौहान	प्र.स्ना.शि.जीवविज्ञान	47.	सुश्री सविता	प्राथमिक शिक्षक
24.	श्रीमती परमजीत कौर	प्र.स्ना.शि.अंग्रेजी	48.	श्री अतहर जमाल	सब स्टाफ
25.	श्रीमती मेनिका रानी	प्र.स्ना.शि.सा.विज्ञान			

विद्यालय परिवार

माध्यमिक विभाग

प्राथमिक विभाग

Thank You

अथ पुरुषार्थ चतुष्टय

भारतीय परिवेश ही नहीं अपितु विश्वपरिवेश में कमोवेश पुरुषार्थ चतुष्टय का विशिष्ट महत्त्व है|पुरुषार्थ चतुष्टय को चतुर्वर्ग अभिधान से भी अभिहित किया गया है| हमारी सभ्यता एवं संस्कृति अत्यंत प्राचीन एवं आस्तिकतावादी होने के कारण पुरुषार्थ चतुष्टय से अन्य देशों की अपेक्षा अधिक संबद्ध दिखाई देती है|इसी कारण प्राचीन साहित्य में जो पुरुषार्थ चतुष्टय का वर्णन किया गया है वह आज के अर्वाचीन साहित्य में भी अव्याहत गति से विस्तार को प्राप्त करता दिखाई देता है|पुरुषार्थ चतुष्टय का महत्त्व धार्मिक ,सामाजिक एवं साँस्कृतिक परंपरा को बनाए रखने के लिए भी है| सच्चे अर्थ में भोग और योग तथा कामना और साधना का समवेत रूप ही पुरुषार्थ है| संस्कृत काव्यशास्त्र में किसी विषय के अध्ययन के लिए चार क्रमों का निर्धारण किया गया है- प्रयोजन, अधिकारी, संबंध एवं विषयवस्तु इन चारों को समुच्चय रूप में अनुबंध चतुष्टय भी कहा जाता है |इस चतुष्टय में प्रथमोक्त प्रयोजन को विविध आचार्यों द्वारा अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया गया है |यहाँ काव्य प्रयोजन अथवा उद्देश्य से तात्पर्य है काव्य अथवा साहित्य के पठन-अनुशीलन से प्राप्त होने वाले लाभ | साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य का प्रयोजन कुछ इस तरह दिया गया है –

"चतुर्वर्ग फलप्राप्ति : सुखादाल्पधियामपि |" (साहित्य दर्पण ,1/2)

आचार्य विश्वनाथ की मानें तो हम सभी सत्साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के प्रतिफल से ही पुरुषार्थ चतुष्टय के लाभों के अधिकारी बन सकते हैं तथापि इस लेख के माध्यम से इसका पृथक्-पृथक् सन्दर्भों में विवेचन करना मेरा एक लेखक के रूप में अभिप्रेत है |

पुरुषार्थ चार बताए गए हैं -धर्म ,अर्थ,काम,और मोक्ष |ये चारों ही स्व-स्व महत्त्व के कारण व्यष्टि एवं समष्टि के लिए अपना-अपना पृथक् -पृथक् महत्त्व रखते हैं |इसी कारण भारतीय साहित्य में स्थान-स्थान पर इनका विशद् और विस्तृत वर्णन किया गया है| इसमें से प्रथम तीन तो मनुष्य के जीवन पर्यंत किसी न किसी रूप में व्यक्ति तथा समष्टि को प्रभावित करते रहते हैं तथा इन्हें त्रिवर्ग भी कहा जाता है|अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष मृत्यूपरांत की स्थिति में प्राप्त होने के कारण लोक में विचिकित्सा का विषय बना हुआ है |चार्वाक मतानुयायी इसे नहीं मानते ,किन्तु हमारे विविध धार्मिक एवं साहित्यिक ग्रंथों में इसका विशद् एवं विस्तृत विवेचन किया गया है|इसका ही इतर नाम निर्वाण भी है|अत: अब इनका क्रमवार वर्णन अधोदत्त प्रकार है -

1 धर्म – यदि धर्म की सामान्य परिभाषा की जाए तो जिसको लोक धारण करता है वही धर्म है-"ध्रियते लोको अनेन इति धर्मः" तथा जिसको व्यक्ति अपनी उन्नति एवं कल्याण हेतु जीवन पर्यंत धारण करता है वह धर्म है|

यथा –"यतोऽभ्युदयनि:श्रेयससिद्धि: स :धर्म:|"
"आचार: परमो धर्मः" हमारा दूसरों के प्रति
किया गया श्रेष्ठ आचरण ही सबसे बड़ा धर्म है|

पुरुषार्थ चतुष्टय में क्रमवार प्रथम संख्या को प्राप्त हुआ यह धर्म मनुष्य को सद्विचारों से युक्त करता है तथा सामाजिक प्रक्रिया को सुचारु एवं सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए प्रेरित करता है।धर्म ही वह वस्तु है जो व्यक्ति को परहित चिन्तन की प्रेरणा देता है। अतः रामचरितमानसकार ने ठीक ही कहा है कि - "परहित सरिस धर्म नहि भाई।" धर्म ही मनुष्यों में पशुओं से विशेष है। अतःहमें अपने धर्म को कदापि नहीं त्यागना चाहिए। यही बात भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गीता में कही गई है –'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः'

2 अर्थ - अर्थ के कोशलभ्य बहुशः अर्थ गिनाए जा सकते हैं यथा- आशय,तात्पर्य,लक्ष्य,वस्तु,पदार्थ,व्यापार,दौलत,धन,संपत्ति और उपयोग इत्यादि किन्तु चतुर्वर्ग की दृष्टि से अर्थ से तात्पर्य धन संपत्ति इत्यादि से लिया गया है। संसार के समस्त प्राणी अर्थ की प्राप्ति के लिए अनय ,अनीति जैसे कार्य व्यापारों द्वारा और नीतिगत मार्ग द्वारा अर्थ साधना में अव्याहत गति से संलग्न रहते हैं।जबकि विद्वानों द्वारा धन की इच्छा करने वाले को अधम कहा गया है और भी इस सम्बन्ध में दृष्टव्य है कि जिस मनुष्य के पास धन है ,वही कुलीन है,वही पंडित है वही वेदज्ञ और गुणज्ञ कहा गया है,सभी गुण धन में आश्रय लेते हैं। यथा –

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पंडितः सः श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः, सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति ॥

लौकिक साहित्य में हीं नहीं अपितु वैदिक साहित्य में भी ऋषियों के निम्न कथन दृष्टव्य हैं –

' वयं स्याम पतयो रयीणाम् ' अर्थात हम संपत्तियों के स्वामी होवें।' तथा ऋग्वेद के संज्ञान सूक्त का निम्न मंत्र भी इसी वांछा को प्रकट करता दिखाई देता है–

"संसमिद्‌युवसे वृषन्नगने विश्वान्यर्य आ।
इलस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर॥'

संसार में इस अर्थ की दान भोग और नाश तीन गतियाँ बताई गई हैं; जिनमें से प्रथम दो मनुष्य की दृष्टि से उचित ही हैं किन्तु नाश तो विद्वानों द्वारा मोघ गति कही गई है।

अतः हमें सुधिजनों द्वारा निर्दिष्ट नीति से अर्थोपार्जन करना चाहिए तथा उसका उपयोग सत्पात्र में करना चाहिए ,जिससे चतुर्वर्ग में समाहित अर्थ की महत्ता मनुष्य के लिए सफल हो सके ,अन्यथा अर्थोपार्जन तो एक गणिका भी दुश्चरित्र से कर ही लेती है उस सन्दर्भ में चतुष्टय अथवा चतुर्वर्ग की दृष्टि से मेरे विचार से उस अर्थ का कोई महत्त्व नहीं।

3 काम - मनुष्य शरीर के षड्रिपुओं में काम,क्रोध,मद,लोभ,मोह और मात्सर्य में काम का प्रथम स्थान है। गीता में काम तथा क्रोध को रजोगुण से उत्पन्न होने वाले ,बहुत अधिक भक्षण करने वाले ,महापापी तथा मनुष्यों के वैरी रूप में वर्णित किया गया है। गीता में ही अन्यत्र स्थान पर इनके संबंध में यह भी कहा गया है कि –

ध्यायते विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

यह काम क्रोध का जनक तथा विषय वासनाओं से पल्लवित होने वाला है। किन्तु इस तथ्य के साथ -साथ हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध महाकवि जयशंकर प्रसाद के इस तथ्य को भी नहीं नकारा जा सकता –

'काम मंगल का मंडित श्रेय ,
सर्ग इच्छा का है परिणाम।'

अतः प्रस्तुत पुरुषार्थ सृजनात्मक तथा रचनात्मक प्रवृति को धारण करते हुए सृष्टि रथ को सतत चलायमान स्थिति में बनाये रखता है। अंत में यह कहना समीचीन ही होगा कि –आनन्द में पूर्णत: लिप्त रहना ही काम है इसका अतिरेक महान दुर्गुण है।

4 मोक्ष- मोक्ष अथवा निर्वाण पुरुषार्थ का चौथा सोपान है। जिसका शाब्दिक अर्थ छुटकारा ,बचाव ,स्वतंत्रता तथा पुनर्जन्म के चक्कर से आत्मा की मुक्ति आदि है। किन्तु यहाँ हमारे लिए अंतिम अर्थ ही अभिप्रेत है। मोक्ष के लिए मनुष्य संन्यास आश्रम में रहकर तप तपस्या के द्वारा प्रयत्नवान होता है तथा इस तपस्या का फल मृत्यूपरांत की स्थिति में प्राप्त होने के कारण वर्णन से परे ही है। नास्तिक दर्शनानुयायियों की दृष्टि में मोक्ष या निर्वाण नाम की कोई स्थिति नहीं अत: वे अपने को त्रिवर्ग तक ही सीमित रखते हैं।

' मन एव मनुष्याणां बंधन मोक्षकारणम्।'

उक्ति के अनुसार व्यक्ति का मन ही बंधन एवं मोक्ष का कारण है अर्थात् मन कुसंगति एवं गलत रास्ते पर ले जाता है तो बंधन का कारण बन जाता है और यही यदि व्यक्ति को सत्संगति' अध्यात्म एवं सद्मार्ग की और उन्मुख करता है तो मोक्ष अथवा मुक्ति का साधन बन जाता है।

आत्मा और परमात्मा का तादात्म्य ही मोक्ष तथा परमानंद की परम अनुभूति है।त्रिवर्ग की प्राप्ति के बाद मनुष्य मोक्ष के लिए वृध्दावस्था अथवा संन्यास आश्रम में तप एवं तपस्या का सहारा लेते हुए विभिन्न धार्मिक कृत्यों में संलग्न रहता है। जीव ब्रह्म में रहकर ही मोक्ष पद को प्राप्त करता है तथा आत्मा का यही सच्चा ज्ञान मोक्ष है।

राजेश कुमार शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

SECTION E

SCHOOL

ACTIVITIES

PHOTO GALLARY

Scouts and Guides

सुभाषितानि

श्लोक 1:

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् |
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ||

अर्थात् : आलसी को विद्या कहाँ अनपढ़ / मूर्ख को धन कहाँ निर्धन को मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ |

श्लोक 2 :

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः |
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ||

अर्थात् : मनुष्यों के शरीर में रहने वाला आलस्य ही (उनका) सबसे बड़ा शत्रु होता है | परिश्रम जैसा दूसरा (हमारा)कोई अन्य मित्र नहीं होता क्योंकि परिश्रम करने वाला कभी दुखी नहीं होता |

श्लोक 3 :

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत् |
एवं परुषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति ||

अर्थात् : जैसे एक पहिये से रथ नहीं चल सकता है उसी प्रकार बिना पुरुषार्थ के भाग्य सिद्ध नहीं हो सकता है |

सुभाषितानि

श्लोक 4 :

बलवानप्यशक्तोऽसौ धनवानपि निर्धनः |
श्रुतवानपि मूर्खोऽसौ यो धर्मविमुखो जनः ||

अर्थात् : जो व्यक्ति धर्म (कर्तव्य) से विमुख होता है वह (व्यक्ति) बलवान् हो कर भी असमर्थ, धनवान् हो कर भी निर्धन तथा ज्ञानी हो कर भी मूर्ख होता है |

श्लोक 5 :

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति |
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ||

अर्थात्: अच्छे मित्रों का साथ बुद्धि की जड़ता को हर लेता है,वाणी में सत्य का संचार क ता है, मान और उन्नति को बढ़ाता है और पाप से मुक्त करता है | चित्त को प्रसन्न करता है और (हमारी)कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाता है |(आप ही) कहें कि सत्संगतिः मनुष्यों का कौन सा भला नहीं करती |

श्लोक 6 :

चन्दनं शीतलं लोके,चन्दनादपि चन्द्रमाः |
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसंगतिः ||

अर्थात् : संसार में चन्दन को शीतल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा चन्दन से भी शीतल होता है | अच्छे मित्रों का साथ चन्द्र और चन्दन दोनों की तुलना में अधिक शीतलता देने वाला होता है |

सुभाषितानि

श्लोक 7 :

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम् |

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् |

अर्थात् : यह मेरा है,यह उसका है ; ऐसी सोच संकुचित चित्त वोले व्यक्तियों की होती है;इसके विपरीत उदारचरित वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक परिवार जैसी होती है |

श्लोक 8 :

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् |

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ||

अर्थात् : महर्षि वेदव्यास जी ने अठारह पुराणों में दो विशिष्ट बातें कही हैं | पहली –परोपकार करना पुण्य होता है और दूसरी – पाप का अर्थ होता है दूसरों को दुःख देना |

श्लोक 9 :

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुंडलेन,

दानेन पाणिर्न तु कंकणेन,

विभाति कायः करुणापराणां,

परोपकारैर्न तु चन्दनेन ||

अर्थात् : कानों की शोभा कुण्डलों से नहीं अपितु ज्ञान की बातें सुनने से होती है | हाथ दान करने से सुशोभित होते हैं न कि कंकणों से | दयालु / सज्जन व्यक्तियों का शरीर चन्दन से नहीं बल्कि दूसरों का हित करने से शोभा पाता है |

सुभाषितानि

श्लोक 10 :

पुस्तकस्था तु या विद्या,परहस्तगतं च धनम् |
कार्यकाले समुत्तपन्ने न सा विद्या न तद् धनम् ||

अर्थात् : पुस्तक में रखी विद्या तथा दूसरे के हाथ में गया धन—ये दोनों ही ज़रूरत के समय हमारे किसी भी काम नहीं आया करते |

श्लोक 11 :

विद्या मित्रं प्रवासेषु,भार्या मित्रं गृहेषु च |
व्याधितस्यौषधं मित्रं, धर्मो मित्रं मृतस्य च ||

अर्थात् : ज्ञान यात्रा में,पत्नी घर में, औषध रोगी का तथा धर्म मृतक का (सबसे बड़ा) मित्र होता है |

श्लोक 12 :

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् |
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ||

अर्थात् : अचानक (आवेश में आ कर बिना सोचे समझे) कोई कार्य नहीं करना चाहिए कयोंकि विवेकशून्यता सबसे बड़ी विपत्तियों का घर होती है | (इसके विपरीत) जो व्यक्ति सोच –समझकर कार्य करता है ; गुणों से आकृष्ट होने वाली माँ लक्ष्मी स्वयं ही उसका चुनाव कर लेती है |

सुभाषितानि

श्लोक 13 :

(अर्जुन उवाच)

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् |

तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ||

अर्थात् : (अर्जुन ने श्री हरि से पूछा) हे कृष्ण ! यह मन चंचल और प्रमथन स्वभाव का तथा बलवान् और दृढ़ है ; उसका निग्रह (वश में करना) मैं वायु के समान अति दुष्कर मानता हूँ |

श्लोक 14 :

(श्री भगवानुवाच)

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् |

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ||

अर्थात् : (श्री भगवान् बोले) हे महाबाहो ! निःसंदेह मन चंचल और कठिनता से वश में होने वाला है लेकिन हे कुंतीपुत्र ! उसे अभ्यास और वैराग्य से वश में किया जा सकता है |

मानवी सैनी
अष्टमी स

VOWS AND VISION OF A HEAD BOY

For those who don't know me,
I'm Brajesh Kumar, a student of Class 12th A.
I stand before you today as a candidate for the position of Head Boy of our school.
I've been given a minute to tell you why I believe I am the right choice for this post.
Being Head Boy is not just about holding a title – it's about taking on responsibility.
I believe I have all the qualities that this role demands, because responsibility doesn't scare me – it motivates me.
Over the past 11 and half years in this school, I have shaped myself into an all-rounder – someone who performs well in academics, sports, and CCA activities.
My leadership qualities, vision, and good coordination with everyone can help us become the best version of ourselves – both individually and as a school.
I could stand here and promise you many things that may sound amazing, but instead, I'll tell you what I can realistically do for our school and for all of you.
If I become the Head Boy, I promise to stand by you in every situation – whether it's related to academics, sports, or co-curricular activities – and work with you to make this year an amazing one.
I assure you that I will manage different school events – like Inter-House Competitions, Sports Day, Annual Day, and more – with discipline and efficiency. Juniors are like friends to me. They can feel free to share their ideas, complaints, and requests with me.
I will serve as a bridge between teachers and students to maintain clear and respectful communication.
I have the compassion to listen, the determination to work hard, and the sense of humor to keep things positive.
Your collaboration will help make this year truly special. And even if I don't win, I'll remain the same person. Because leadership is not just a title – it's a mindset.
Thank you all for your attention. I'd like to end my speech with a quote:
"A true leader doesn't just talk about problems – they show how to solve them."

Jai Hind
BRAJESH KUMAR
CLASS- 12TH A

विद्यालय की प्रधान छात्रा (हेड गर्ल) के रूप में मेरे उद्गार

अक्सर कहते हैं "मान लो तो हार है, ठान लो तो जीत"। आज विद्यालय की प्रधान छात्रा के रूप में चयन होकर मैं गर्व, जिम्मेदारी और कृतज्ञता का अनुभव कर रही हूँ। यह पद केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है – अपने स्कूल, अपने शिक्षकों और अपने साथियों के प्रति।

मैं अपने शिक्षकों का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मुझमें यह नेतृत्व क्षमता देखी और विश्वास जताया। यह जिम्मेदारी मुझे याद दिलाती है कि अब केवल अपने लिए नहीं बल्कि पूरे विद्यालय के लिए सोचना है।

साथियों, यदि हम सभी ठान लें कि हम कोई भी कदम विद्यालय के अहित में न उठाएंगे, अनुशासित रहेंगे, शैक्षणिक व अकादमिक रूप से उच्च प्रदर्शन करेंगे, परस्पर सम्मानपूर्ण व्यवहार में विश्वास रखेंगे, तो हम अपने विद्यालय को सर्वश्रेष्ठ बनाने में अपना योगदान देंगे। न हम विद्यालय संपत्ति को नुकसान पहुँचाएँगे, न ही अपने साथियों को ऐसा करने देंगे।

यही संकल्प यदि हम सभी विद्यालय के हित में ठोस रूप से करेंगे, तो इस विद्या के पावन मंदिर, हमारी ज्ञान व संस्कारों की पहचान पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 (रेल डिब्बा कारखाना) हुसैनपुर को देश के सर्वश्रेष्ठ विद्यालय के मुकाम पर पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता।

यह कार्य आप सभी के सहयोग के बिना हेड गर्ल / हेड बॉय के लिए सम्भव नहीं है। विद्यालय के कल्याण में आप सभी का सहयोग सदैव होना चाहिए। तो मैं यह उम्मीद करती हूँ कि आप सभी हमारा समर्थन करेंगे

और अंत में –
"गिरना नहीं है,
गिर के संभलना है ज़िंदगी,
रुकने का नाम मौत है,
चलना है ज़िंदगी"।
धन्यवाद।
जय हिंद, वंदे मातरम्।

जसकीरत कौर, बारहवीं-अ
प्रधान छात्रा (हेड गर्ल)